संगीतमय

# श्रीरामकथा

रचयिता – म. ओम् मुनि वानप्रस्थ

। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

संगीतमय

# श्रीरामकथा

रचयिताः म. ओम् मुनि वानप्रस्थ

- **पुस्तक** : संगीतमय श्रीरामकथा
- **प्रकाशक** : म. ओम् मुनि वानप्रस्थ
  वैदिक भक्ति साधन आश्रम
  आर्य नगर, रोहतक
  मो. 98123–31196
- **सम्पादक** : आ. रामसुफल शास्त्री
  मो. 94664–72375
- **रचयिता** : म. ओम् मुनि वानप्रस्थ
- **सर्वाधिकार** : प्रकाशकाधीन
- **संस्करण** : प्रथमः 1000 प्रतियां
  (अक्तुबर 2010)
- **लागत मुल्य** : 25/– रू. मात्र
- **मुद्रक** : श्री प्रदीप कुमार चुटानी
  राणा प्रताप प्रिंटिंग प्रैस
  रोहतक (हरियाणा)
  मो. 98962–05343
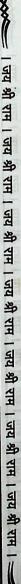
## प्रकाशकीय

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा एवं आशीर्वाद के फलस्वरूप, मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी के जन-जन प्रिय जीवन चरित पर आधारित 'संगीतमय श्रीरामकथा' की सुन्दर रचना, जिस सुगमता एवं सहजता से पूर्ण हुई, इस अनुपम् कथा का प्रकाशन भी उतनी ही गौरवमयी रीति से हुआ। प्रभु कृपा से श्रद्धालु श्रीराम भक्तों का अनुकरणीय सहयोग हृदय में हर्ष उत्पन्न करता है और उनकी भावना को देखकर मन गद्‌गद हो उठता है।

मैं उन सभी उदारमना दानी सज्जनों का हार्दिक आभार एवं धन्यवाद प्रकट करना अपना पावन कर्त्तव्य समझता हूँ, जिन्होंने न केवल मेरा उत्साहवर्धन किया अपितु संगीतमय श्रीरामकथा के प्रकाशन हेतु मुक्तहस्त से धनराशि प्रदान करके अनुकरणीय कार्य किया है। परमात्मा इन सब दानी महानुभावों को धर्म और शुभ कार्यों में ओर अधिक प्रेरणा एवं शक्ति प्रदान करे।

1. प्रधान, आर्य समाज, नागोरी गेट, हिसार — 11000-00
2. श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, प्रधान वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्य नगर, रोहतक — 5100-00
3. श्री श्याम सुन्दर जी सोनी, सन सिटी, गुड़गांव — 5000-00
4. श्री ओम् प्रकाश जी कुकरेजा, माडल टाउन, हांसी (हिसार) — 5000-00

विनीत-

म. ओम् मुनि वानप्रस्थ
वैदिक भक्ति साधन आश्रम,
आर्य नगर, रोहतक (हरियाणा)
मो. 98123-31196


। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

# विषयानुक्रमणिका

| क्र.स. | विषय | पृष्ठ संख्या1. |
| --- | --- | --- |



। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

## सम्पादकीय

महर्षि बाल्मीकि कृत रामायण पर आधारित संगीतमय श्रीरामकथा की रचना नाटकीय ढंग से प्रारम्भ होकर पूर्ण हुई। मास फरवरी 2009 में एक भजनों के कार्यक्रम में हमने, म. ओम् मुनि वानप्रस्थ को आमन्त्रित किया था। कार्यक्रम की समाप्ति पर मैने पूछा कि क्या आप आगामी नवरात्रों में संगीत पर आधारित रामायण की कथा कर सकते हैं। मुनिजी ने कहा कि संगीतमय श्रीरामकथा के लिए काव्य एवं संगीतमय पदों की आवश्यकता है। मैं तीन-चार दिनों के बाद कथा करने बारे आपको उत्तर दूंगा। तीन दिन के बाद मुनिजी ने फोन पर बताया कि उन्होंने रामायण के बाल काण्ड पर आधारित संगीतमय 15 पदों की रचना करली है और इन्ही पदों के आधार पर वे तीन दिन संगीतमय श्रीरामकथा करने को तैयार हैं। हमने नवरात्रों के अन्तिम तीन दिनों में एक घण्टा प्रतिदिन मुनिजी से श्रीरामकथा सुनी जो सभी को बहुत पसन्द आई और इनसे सम्पूर्ण रामकथा इसी प्रकार शास्त्रीय संगीत पर लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। मुनिजी ने हमें संगीतमय श्रीरामकथा लिखने का आश्वासन दिया और अपने वचनों के अनुसार लगभग 8-9 मास में संगीतमय श्रीरामकथा की रचना पूर्ण करली।

आदरणीय मुनिजी ने कथा की हस्तलिपि मुझे दिखाई तो संगीतमय श्रीराम कथा पढकर मेरा हृदय गदगद् हो उठा। शुद्ध बाल्मीकि रामायण पर आधारित, प्रक्षेपों व काल्पनिक प्रसंगों से अछूती, शास्त्रीय रागों पर आधारित पद एवं प्रसंगानुसार सुन्दर गीतों की रचना एक अनुठा प्रयास है। अब जबकि संगीतमय श्रीरामकथा के प्रकाशन की योजना है, मुनिजी ने कम्पूटर पर तैयार कथा की प्रतिलिपि देकर भाषा एवं व्याकरण के अनुसार शोधने का कार्य मुझे सौंप दिया। मैने अपनी अल्पबुद्धि के अनुसार थोड़ी-बहुत जो मात्राओं आदि की गलतियां थी, उन्हें ठीक कर दिया फिर भी अल्पज्ञ होने के नाते सम्भव है कुछ त्रुटियां रह भी सकती हैं। मुझे पूर्ण आशा एवं विश्वास है कि संगीतमय श्रीरामकथा सुनने व पढने वाले सभी रामभक्त आत्मिक आनन्द का अनुभव करेंगे और श्रीराम के पावन चरित को अपने जीवन में आत्मसात् करेंगे। ऐसी मंगलमय शुभ कामना सभी के लिए है।

विनीत-

आ. रामसुफल शास्त्री(वैदिक प्रवक्ता)

शास्त्री भवन, लाल सड़क, हाँसी(हिसार)

# प्राक्कथन

मानव जीवन को महान् एवं श्रेष्ठ बनाने हेतु जीवन में बल, विद्या व धर्म की प्राप्ति एवं उसकी वृद्धि करना आवश्यक है। इनकी प्राप्ति और उन्हें जीवन में चरितार्थ करने के लिए मानव को तन, मन व धन से पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए। इससे उनका जीवन महान्, श्रेष्ठ व सफल बनेगा और समस्त विश्व को भी सत्य के मार्ग पर लाने में समर्थ हो सकेंगे। परन्तु इन सभी गुणों की प्राप्ति एवं पूर्ण उपलब्धि के लिए हमें अपने जीवन में महान् पुरूषों का प्रेरणादायक जीवन चरित्र चाहिए जो हमारे जीवन को प्रकाश किरण बनकर आलोकित एवं प्रकाशित कर सके। विश्व वांगमय एवं वैदिक साहित्य में अगर ऐसा प्रेरणादायक महामानव, वेदानुकूल एवं वैदिक परम्पराओं व सिद्धान्तों के अनुरूप यदि कोई चरित्र नायक हैं तो वे हैं रघुकुल शिरोमणि 'मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम और योगेश्वर श्री कृष्णचन्द। दोनों महामानव धरातल के जनमानस के हृदयों को सदैव प्रेरणा देते रहेंगे।

उसी युग पुरूष श्रीराम पर अनेक लेखक, विचारक एवं समीक्षक पूर्व काल से अपनी लेखनी के माध्यम से उनके उज्जवल चरित का गुणगान करते आ रहे हैं। हिन्दी साहित्याकाश के दैदीप्यमान महाकवि सन्त तुलसीदास जी के रामचरित मानस की चर्चा विश्व के मानव मात्र को प्रभावित कर रही है। रामचरित मानस के बम्बई, गोरखपुर एवं कलकत्ता के प्रकाशन भिन्न-2 होने पर ये विकल्प रहता है कि आखिर जीवन का सत्य क्या है, और अन्य अनेक विद्वानों की लेखनी भी इस पुनीत कार्य में संलग्न रही है। किन्तु यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि इन सभी रचनाओं में सबसे अधिक सत्य की कसौटी पर शुद्ध स्वर्ण के समान श्रीराम चरित गाथा कविकुलगुरू आदिकवि महर्षि बाल्मीकि की अमर कृति 'बाल्मीकि रामायण' है। परन्तु आम जन की भाषा से अछूति होने के कारण आज भी पूर्ववत् दूरूह बनी हुई है। अनेकानेक प्रक्षिप्त विषयों से युक्त होने के कारण साधारण जन में ग्राह्य नही है। आर्यजगत् के मूर्धन्य वैदिक विद्वान, लेखक एवं समिक्षक पूज्य स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती की रचना 'बाल्मीकि रामायण' एक भगीरथ प्रयास है, जिसे सत्य व प्रामाणिकता के आधार पर निस्संकोच मान्यता दी जा सकती है।

उसी कड़ी में मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के जीवन चरित को, म. ओम् मुनि वानप्रस्थ, वैदिक भक्ति साधन आश्रम, रोहतक, द्वारा छन्दोबद्ध संगीत के

सुरों में, 'संगीतमय श्रीरामकथा' नामक लघु ग्रन्थ की रचना कर, सर्व साधारण के जन मानस को प्रेरित करने का अनुठा प्रयास किया है। अनेक काल्पनिक प्रसंग एवं भ्रान्तियां जहां निर्मूल होती हैं, वहां भगवान् श्री राम के जीवन से जुड़े अनेक अनसुलझे प्रश्न भी सुलझते हैं। इस सम्बन्ध में मुनि जी से सम्पर्क सूत्र जुड़ने एवं चर्चा होने पर, संगीतमय श्रीरामकथा, जो हृदयग्राही, कर्णप्रिय सुर–ताल में ढली सून्दर रचना बन रही थी उसे शीघ्र पूर्ण करने के लिए, उनका उत्साह वर्धन करते हुए प्रेरित किया। मुनि जी ने हमारे सप्रेम संवाद को विनम्र भाव से स्वीकार करते हुए, संगीतमय श्रीरामकथा को शीघ्र पूर्ण करने का आश्वासन दिया और कथा पूर्ण होने पर मुनिजी द्वारा भेजी 'संगीतमय श्रीरामकथा' की पाण्डुलिपि को आद्योपान्त पढ़कर अत्यन्त हर्ष एवं प्रसन्नता की अनुभूति हुई। संगीतमय श्रीरामकथा को पढ़ना प्रारम्भ करने पर आगे ओर आगे पढ़ने की अभिरूचि बनी रहती है। अनेक स्थलों पर प्रसंगानुकूल प्ररेणादायक गीतों से विषय ओर अधिक रूचि कर बन गया है। ये उनकी साहित्य साधना की अनुपम् उपलब्धि है। संगीत, वादन एवं काव्य रचना आदि से इनका लगाव तो रहा है किन्तु जीवन का अंग नही रहा। गायत्री साधना, उच्च जीवन संकल्प, परिश्रम और ईश्वर कृपा से ये सब उन्हे प्राप्त हुआ है। अतः मुनिजी इतनी सून्दर रचना के लिए साधुवाद के पात्र हैं।

साहित्य एवं संगीत प्रेमी भाई–बहनों से विनम्र निवेदन है कि इस 'संगीतमय श्रीरामकथा' को पढ़–सुन कर उन्हें पूरा आत्मिक आनन्द व मानसिक सुख प्राप्त होगा। आशा है आप मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के जीवन चरित से प्रेरणा लेकर, अपने, समाज व अपने राष्ट्र के चरित्र को ऊंचा उठायेंगे। वैयक्तिक जीवन से लेकर पारिवारिक व सामाजिक जीवन में समरसता एवं मर्यादित उच्च मुल्यों की प्रस्थापना करते हुए, अपने व अन्यों के मानव जीवन को सफल व सार्थक बनायेंगे, ऐसी मेरी शुभ कामना है।

विदेषानुमचर
प. भरत लाल शास्त्री, एम. ए.
वैदिक प्रवक्ता
मो. 98120–29274

आर्य भवन, वकील कालोनी
हाँसी (हिसार) हरियाणा

# दो-शब्द

भारतीय संस्कृति में श्रीराम और श्रीकृष्ण दो ऐसे दिव्य महापुरूष हुए हैं, जो सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। इन्ही दिव्य पुरूषों के जीवन से सम्बन्धित रामायण और महाभारत दो ऐसे महाकाव्य ग्रन्थ हैं जो जन साधारण में अत्यधिक लोकप्रिय हुए हैं। बच्चे से बूढ़े तक सभी को इन विभूतियों तथा इन ग्रन्थों के सन्दर्भ या घटनाएं स्मरण है। श्रीराम और श्रीकृष्ण ऐसे युग पुरुष हुए जिनका अस्तित्व हमारी संस्कृति को सदा-सर्वदा के लिए गौरव प्रदान करता रहेगा। जिस प्रकार कुछ अज्ञानी या स्वार्थी लोगों ने समय-समय पर श्रीकृष्ण से सम्बन्धित ग्रन्थों में प्रक्षेप करके उनके व्यक्तित्व को धूमिल करने का कुप्रयास किया है उसी प्रकार समय-समय पर रामायण में भी प्रक्षेप हुए हैं, जिसके कारण श्री राम जैसे आदर्श व्यक्तित्व पर भी अनेक शंकाएं प्रकट की जाने लगी हैं। कुछ अज्ञानी, स्वार्थी या भावुक लोगों ने श्रीराम के जीवन की घटनाओं को तोड़-मरोड़ कर इस ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जिससे उनके अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लगाए जा रहे हैं। श्रीराम को सीता का त्याग करने वा शम्बुक का वध करने के कारण स्त्री और शुद्र विरोधी बताया जाना चिन्तनीय है। रामायण के कुछ अन्य पात्रों का विवेचन भी इस ढंग से किया जाने लगा है जो अत्यधिक हास्यस्पद और आपत्ति-जनक है। महर्षि बाल्मीकि को डाकू कहना, वीर हनुमान को बन्दर कहना, बुद्धिमान जाम्बवान् को रीछ, तपस्वी जटायु को गिद्ध और मेधावी गरूड़ को पक्षी कहना अज्ञानता का ही परिणाम है।

आश्चर्य है कि रामायण को लेकर ऐसी घटनाओं का प्रचलन हो गया है जो उस ढंग से घटित हुई ही नही थी- जैसे सीता की उत्पत्ति, सीता स्वयंवर, स्वयंवर में रावण का आना, लक्ष्मण और परशुरामजी का कटु सवांद, अहिल्या का पत्थर बनना और श्री राम का पाँव लगने से उसका मानवी बन जाना, लक्ष्मण द्वारा रेखा खैंचना, बाली को धोखे से मारना, शबरी द्वारा जूठे बेर खिलाना, श्रीराम द्वारा शिवलिंग की स्थापना रामसेतु पुल, अंगद द्वारा पांव जमाना, हनुमान् की पूंछ को आग लगाना, उनका पहाड़ उठाकर लाना, रावण के दस मुख होना, कुम्भकर्ण का छः महीने सोना, इन्द्रजित् की शक्ति लगने से लक्ष्मणजी का मूर्छित होना, सीता की अग्नि-परीक्षा, रावणका विजयादशमी के दिन मारा जाना, श्रीराम का दिपावली के दिन अयोध्या को लौटना तथा श्रीराम का ग्यारह हजार वर्षों तक राज्य करना आदि अनेक घटनाएं जिस ढंग से घटित हुई थी वह रूप पूरी तरह से बदल गया है। इस प्रकार के प्रक्षेपों के आधार पर एक ओर जहां हमारी गरिमामयी संस्कृति का उपहास उड़ाया जाता है, रामायण की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिन्ह लगाया जाता है, वही दुसरी ओर हमारे महापुरूषों की दिव्यता पर भी आंच आती है। इसलिए वैदिक धर्म से जुड़े अनेक लेखकों एवं मनीषियों

ने बाल्मीकि रामायण को आधार मानकर श्रीराम तथा रामायण के अन्य चरित्रों का सही–सही चित्रण करने का प्रयास किया है।

उसी आधार पर महात्मा ओउम् मुनि जी ने 'संगीतमय श्रीरामकथा' पुस्तक लिखकर एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। इस सम्बन्ध में भ्रतृहरि जी की उक्ति बहुत ही सार्थक है– 'साहित्य संगीत कला विहीनः साक्षात्पशुः पुच्छ विषाण हीनः।' यह उक्ति हमारे सामने साहित्य की गरिमा को तो प्रकट करती है मगर साथ ही साहित्यकार के महत्व और दायित्व की ओर भी साफ संकेत करती है कि साहित्य सृजन कोई खिलवाड़ न होकर बहुत ही गंभीर दायित्व से परिपूर्ण प्रक्रिया है तथा होनी भी चाहिए। किसी संकुचित दायरे में सिमट कर लिखा गया साहित्य न तो शाश्वत् ही हो सकता है और न ही मानवीय मूल्यों का पोषक। अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन करने के लिए साहित्यकार का स्वयं मानवीय मूल्यों का पोषक होना अपेक्षित है ताकि वह उन मूल्यों के धरातल पर सामाजिक समरसता व चेतना का संवाहक बन सके। ये समस्त गुण तो स्वयं रामायण में नीहित हैं ही मगर मुनि जी ने अपने काव्य की चासनी लगाकर उन भावों को और भी अधिक सरस, स्वादु एवं ग्राह्य बना दिया है। साहित्य का अपना अस्तित्व तो है ही मगर उसके साथ जब गेयता का गुण भी जुड़ जाता है तो उसकी गुणवता निश्चित् रूप से बढ़ जाती है। यही कारण है कि आज सूर, तुलसी तथा कबीर आदि अनेक कवि, काव्य के क्षेत्र में आंना सर्वोच्च स्थान बनाए हुए हैं। 'संगीतमय श्रीरामकथा' में समूची रामकथा को सुरक्षित रखते हुए गागर में सागर की उक्ति को सार्थक किया गया है। कई बार देखा गया है कि कठिन भाषा एवं वाक्य–विन्यास के कारण भावों की सही–सही सम्प्रेषणीयता नही हो पाती है, मगर 'संगीतमय श्रीरामकथा' प्रारम्भ से लेकर अन्त तक कहीं भी पाठक को अपनी पकड़ से विलग नही होने देती है, क्योंकि इसमें भाषा का प्रयोग सरलता और सहजता से किया गया है, इससे कथा बहुत ही प्रभावशाली ढंग से सीधी पाठक के हृदय को छूती हैं। सुन्दर शब्दों के चयन तथा सरस शैली के प्रयोग ने पुस्तक को निश्चित रूप से चार चान्द लगाए हैं। म. ओम् मुनि जी ऐसी सुन्दर रचना देने के लिए अत्यधिक साधुवाद के पात्र हैं।

वैदिक वशिष्ठ आश्रम(महर्षि दयानन्द धाम) — विदुषामनुचर–
सुन्दरपुर, जिला–मण्डी (हि.प्र.) — म. चैतन्यमुनि वानप्रस्थ


। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

# अनुभूमिका

महर्षि बाल्मीकि आदि कवि के रूप में भारतीय जनमानस में प्रतिष्ठित हैं। बाल्मीकि रामायण एक विशुद्ध ऐतिहासिक महाकाव्य है। जिसमें महर्षि ने अपने समकालीन अयोध्या में राज्य कर रहे, लोक प्रसिद्ध मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द जी के जन्म के पूर्व से लेकर रावणं वध उपरान्त अयोध्या वापसी एवं राज्याभिषेक तक की घटनाओं का विस्तृत एवं विषद वर्णन किया है। महर्षि बाल काण्ड के सर्ग–4, श्लोक–2 में लिखते हैं–

एक दिवस देवर्षि नारद, महर्षि बाल्मीकि के आश्रम में पधारे। आदर–सत्कार उपरान्त महर्षि बाल्मीकि ने उनसे पूछा–

कोन्वस्मिन् साम्प्रतं लोके . . . . .।। बा.का. सर्ग–1, श्लोक–2/5

अर्थात्– हे देवर्षि! वर्तमान समय में इस लोक में गुणवान तथा बलवान कौन है? उत्तम चरित्र से युक्त सब प्राणियों में हितकारी और विद्वान कौन है? शक्तिमान और सर्वागीण प्रियदर्शन कौन है? कौन आत्म ज्ञानी, क्रोधजित् व कान्तिमान है? किसके क्रुद्ध हो जाने पर देव लोग भी भयभीत हो जाते हैं? मुझे यह सब जानने की बड़ी उत्सुकता हो रही है। हे देवर्षि! आपका गमन तीनों लोकों (देव लोक–हिमालय व त्रिविष्टिप, मृत्यु लोक–आर्यवर्त एवं पाताललोक– अफीका व अमरीका) में है। अतः आप ऐसे नरकेसरी को जानने में समर्थ हैं। इसलिए हे देवर्षि! मुझे इन गुणों से सम्पन्न महामानव के विषय में बताने की कृपा करें। महामुनि बाल्मीकि के वचन सुन कर देवर्षि नारद ने कहा–

बहवो दुर्लभायचैव ये त्वया......रामं सत्यपराक्रमम्।।बा.का. सर्ग–1, श्लोक–7/19. अर्थात्– हे मुने! आपने जो ये बहुत से गुण वर्णन किए हैं, वे अत्यन्त दुर्लभ हैं। फिर भी मैं तुम्हें बताता हुँ। इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न अयोध्या के राजा, भुमण्डल में श्रीराम के नाम से प्रसिद्ध हैं। रघुकुल शिरोमणि श्री राम जितेन्द्रिय, महापराक्रमी, दिव्यकान्तियुक्त, धैर्यवान, बुद्धिमान, नीतिवान व श्री–शोभा–ऐश्वर्य युक्त हैं। वे अन्यों को वश में रखने वाले, शत्रुओं को नष्ट करने वाले हैं। उन्नत कन्धों वाले महाबाहु,शंख के समान गर्दन वाले, उन्नत स्निग्ध वर्ण वाले हैं।

बड़ी-बड़ी कमल जैसी आंखें, सर्वसौन्दर्ययुक्त, धर्म के मर्मज्ञ, सत्य प्रतिज्ञ एवं शुभ लक्षणों वाले हैं। प्रजा रक्षक, धर्म रक्षक, स्वधर्म रक्षक और अपने आश्रितों की रक्षा करने वाले हैं। वेद – वेदांगों के ज्ञाता, धनुर्वेद में पारांगत, सर्व शास्त्रों के अभिप्राय व तत्त्वों के जानने वाले हैं। स्मृति व प्रतिभा से युक्त, सब के प्रिय साधु स्वभाव, दीनता रहित एवं लौकिक वैदिक क्रिया में कुशल हैं। नदियों से समुद के समान सदा सत्पुरुषों से घिरे हुए, आर्यश्रेष्ठ, प्रिय दृष्टि वाले, सब के साथ समान व्यवहार करने वाले, सर्वगुण सम्पन्न माता कौशल्या के आनन्द को बढाने वाले, गम्भीरता में समुद के समान, धैर्य में हिमालय के समान, क्षमा में पृथिवी के समान, पराक्रम में विष्णु के समान, चन्द्र के समान प्रियदर्शन वाले, क्रोध में प्रलय काल की अग्नि के समान, दान में कुबेर के समान व सत्य में धर्म के तुल्य हैं।इन सब प्रकार के गुणों से विभूषित सत्य पराक्रमी, अयोध्यापति श्री रामचन्द्र हैं। इस प्रकार श्री राम के गुणों का वर्णन करने के पश्चात देवर्षि नारद ने श्री रामचन्द्र के जन्म के पूर्व से लेकर रावण वध और अयोध्या लौट कर राज्याभिषेक तक रामचरित का सम्पूर्ण व विषद वर्णन महर्षि बाल्मीकि को सुनाया। तदुपरान्त् देवर्षि नारद को आदर सहित विदा करके महामुनि बाल्मीकि अपने एक शिष्य के साथ गंगा नदी में स्नान करने चल पड़े। मार्ग में एक घटना ने उनके हृदय को विचलित कर दिया। काम क्रीडा में लिप्त क्रौञ्च पक्षी के जौड़े में से नर कौञ्च का एक व्याध ने अपने तीर से वध कर दिया। कौञ्च मादा का करूण क्रंदन और भूमि पर तड़पते नर कौञ्च पक्षी को देखकर दयालु ऋर्षि का हृदय करूण वेदना से तड़प उठा और उनके मुख से अनायास ही यह श्लोक फूट पड़ा-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत् कौञ्च मिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।। बा.का., सर्ग-2, श्लोक-15

अर्थात्-हे निषाद! तुम बहुत दिनों तक इस संसार में प्रतिष्ठा से वंचित रहो, क्योंकि परस्पर काम-क्रीडा में लिप्त नर क्रौञ्च पक्षी को मार कर तूने गुरूतर अपराध किया है।इस घटना को देखकर सहसा मुख से निकले शब्दों के प्रति महर्षि बाल्मीकि के हृदय में चिन्ता उत्पन्न हुई कि मैने दुःख के आवेग में आकर सहसा यह क्या कह डाला। स्नानादि से निवृत होकर

शिष्य के साथ महर्षि बाल्मीकि अपने आश्रम में चले गए। तभी कुछ समय पश्चात वेदों के वक्ता प्रजापिता ब्रह्मा जी महर्षि बाल्मीकि से मिलने उनके आश्रम में आए। अपने आश्रम में सहसा प्रजापिता ब्रह्मा जी को आया देख कर, अत्यन्त विस्मित होते हुए महर्षि बाल्मीकि हाथ जोड़कर उनके सामने खड़े होगए। पाद्य, अर्घ्य, आसन आदि द्वारा उन्होंने ब्रह्मा जी आदर-सत्कार किया और कुशल-क्षेम के पश्चात् यथास्थान सभी लोग बैठ गए। तत्पश्चात् निषाद द्वारा घटित करूणामय घटना पर विचार करते हुए महामुनि बाल्मीकि कुछ समय के लिए ध्यान-मग्न हो गए। ध्यान टूटने पर, उनके मुख से-"मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः...........'।। श्लोक का उच्चारण निकल पड़ा। महर्षि बाल्मीकि की इस विह्वलता को देख कर ब्रह्मा जी हंसते हुए बोले- हे तपस्वी! तुम्हारे मुख से जो यह सहसा वाक्य निकला है, वह छन्दोबद्ध श्लोक ही है। मेरी इच्छा से ही आपकी वाणी पर सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ है, अब इसी छन्द में सांगोपांग रघुकुल शिरोमणि मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के जीवन चरित का वर्णन करो,जैसा कुछ समय पूर्व आपने स्वयं देवर्षि नारद से सुना है। वैसा ही श्रेष्ठ मनोहर श्रीराम के चरित को काव्य में प्रकट करो। मेरें आशीर्वाद से रामचरित की जिस घटना को ध्यान लगाकर देखना चाहोगे, तुम्हें प्रत्यक्ष की तरह दिखाई देंगी। जब तक पृथ्वी पर पर्वत व नदियां विद्यमान रहेंगी तब तक तुम्हारी रची रामायण की कथा लोक में प्रचलित रहेगी। ऐसा कहकर ब्रह्मा जी वहाँ से प्रस्थान कर गए।

तब ब्रह्मा जी द्वारा स्वयं अनुमोदित मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र के मानवोचित गुणों पर मुग्ध होते हुए महाकवि बाल्मीकि ने श्री रामचन्द्र जी का जीवन चरित विस्तारपूर्वक लिखना प्रारम्भ किया। ब्रह्मा जी के आशीर्वाद से रामचरित की सभी घटनाओं को प्रत्यक्ष की तरह ध्यान लगा-कर अवलोकन भी कर लिया। ध्यान की अवस्था में महामुनि ने यह भी जान लिया कि श्री राम सहित चारों भाईयों की उत्पत्ति से पूर्व रावण के अत्याचारों से पीड़ित देव, गन्धर्व, व ऋषिगण प्रजापिता ब्रह्मा जी के समक्ष उपस्थित हुए और प्रार्थना कि- हे प्रजा-पिता! आपने वरदान तो रावण को दिया और कष्ट हम उठा रहे हैं। अतः आप ही कोई ऐसा उपाय कीजिए कि जिससे हम रावण के

अत्याचारों से बच जायें।

तब ब्रह्मा जी ने कहा– हे पुत्रो! इस सृष्टि में ऐसा कोई उत्पन्न हुआ जीव नही है, जिसकी मृत्यु निश्चित न हो। मुझे स्मरण है कि रावण ने जो वरदान मांगा था, उसमें देवता, गन्धर्व, यक्ष, ऋषि, असुर, राक्षस, दानव व नाग आदि से अवध रहने का वरदान मांगा था। किन्तु अहंकार वश मानव जाति को छोड़ दिया, क्योंकि रावण के समान दिव्यास्त्र न होने के कारण वह मानव जाति को निर्बल समझता था। तब ब्रह्मा जी ने सभी को बताया कि अब मैं तुम्हे रावण के वध की योजना विस्तार से समझाता हुँ और इस योजना के अनुसार सब मिलकर कार्य प्रारम्भ करें। इस समय अयोध्या में इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न राजा दशरथ राज्य कर रहे हैं। उनके पूर्वज भूमण्डल के चक्रवर्ती सम्राट थे।किन्तु कुछ वर्षों से उनकी शक्ति क्षीण होने के कारण रावण ने विद्रोह कर दिया है। कुछ समय पश्चात वानरराज बाली भी अधर्म के कार्य करेगा। वानर जाति आर्यों की उपजाति है, उनमें बाली, सुग्रीव, हनुमान, नल, नील, ऋषभ व गन्धमादन आदि वीर वानर देवताओं द्वारा नियोगज उत्पन्न होंगे, जो आगे चल कर राम – रावण संग्राम में श्रीराम की सहायता करेंगे। राजा दशरथ की तीन रानियां हैं, किन्तु अभी तक निःसन्तान हैं। छोटी रानी केकैयी के पाणि ग्रहण संस्कार के समय राजा दशरथ केकैयराज अश्वपति को यह वचन दे चुके थे कि उनकी पुत्री केकैयी से उत्पन्न पुत्र ही अयोध्या का भावी राजा होगा, जबकि राजा दशरथ यह भली–भांति जानते थे कि इक्ष्वाकु वंश में ज्येष्ठ पुत्र को ही राजा बनाने का विधान है।

कुलगुरू महर्षि वशिष्ठ की मन्त्रणा से राजा दशरथ श्रृंगि ऋषि से पुत्रेष्टी यज्ञ सम्पन्न करायेंगे, जिसके फलस्वरूप उन्हें चार पुत्रों की प्राप्ति होगी। शिक्षा–दीक्षा के उपरान्त युवा होने पर सर्वप्रथम महर्षि विश्वामित्र का महत्वपूर्ण दायित्व प्रारम्भ होगा। वे श्रीराम–लक्ष्मण को यज्ञ रक्षार्थ राजा दशरथ से मांग कर ले जायेंगे। महर्षि वशिष्ठ इस कार्य में उनकी सहायता करेंगे। वे राम–लक्ष्मण को, बला और अतिबला नामक दो महान् विद्याएं प्रदान करेंगे। राम के हाथों ताटका वध करायेंगे और सिद्धाश्रम में पहुंच कर दोनों भाईयों को दिव्यास्त्रों से सुसज्जित एवं प्रशिक्षित करेंगे। इसके




। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

अतिरिक्त तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों, रावण व अन्य राक्षसों के अत्याचारों के साथ चक्रवर्ती सम्राट के दायित्व का बोध भी करायेंगे। तत्पश्चात् यज्ञ रक्षार्थ मारीच, सुबाहु आदि राक्षसों का राम के हाथों वध करायेंगे। यह सब राम के शक्ति परीक्षण के लिए होगा। श्रीराम के बाहुबल की अन्तिम परीक्षा के लिए ऋषि विश्वामित्र दोनों भाईयों को मिथिला नगरी में ले जाकर, राजा जनक की शर्त के अनुसार शिव धनुष भंग करवा कर, राम सहित चारों भाईयों का विवाह संस्कार करवायेंगे और अपने दायित्व को पूर्ण करके प्रस्थान कर जायेंगे।

अयोध्या लौटने के कुछ समय पश्चात् केकैयराज अश्वपति कुमार भरत को अपने पास बुला लेंगे, प्रेमवश कुमार शत्रुघ्न भी भरत के साथ जायेंगे। भरत की अनुपस्थिति में केकैयराज को दिये वचन से भयभीत होकर राजा दशरथ अपने ज्येष्ठ पुत्र राम का राज्याभिषेक शीघ्र करना चाहेंगे। किन्तु रावण वध के लिए राम का दण्डक वन गमन सुनिश्चित करने के लिए देवगण केकैयी की कुल दासी मन्थरा को अपने पक्ष में करके उसकी सहायता से रानी केकैयी द्वारा देवासुर संग्राम में घायल दशरथ की रक्षा करने पर दिये गये दो वरों के माध्यम से भरत को राज्याभिषेक और राम के लिए दण्डक वन प्रवास दिलाया जायेगा। श्रीराम अपने पिता के वचनों का पालन करने व माता केकैयी की प्रियता के लिए वन को प्रस्थान कर जायेंगे। राम के वन गमन के साथ ही राजा दशरथ की मृत्यु का योग भी निश्चित है।

श्रीराम के साथ उनकी प्रिय भार्या सीता और अनुज लक्ष्मण भी वन गमन करेंगे। वनवास की अवधि में श्रीराम की सहायता एवं मार्गदर्शन में किस–2 ऋषि और देवों की क्या भूमिका होगी, वह सब योजनानुसार ही तय होगा। वनवास के अन्तिम दिनों में वानरराज सुग्रीव व हनुमान आदि वानर वीरों की रावण वध की सहायता में अहम भूमिका होगी। अब सभी मिलकर इस योजनानुसार कार्य करें। वनवास के अन्तिम दिनों में श्रीराम के हाथों रावण का वध निश्चित है। ऐसा समझाकर प्रजापिता ब्रह्माजी ने सभी देवों और ऋषियों को आश्वस्त करके भेज दिया। राष्ट्र भाषा हिन्दी के राष्ट्रीय कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने अपने 'साकेत' नामक महाकाव्य के प्रारम्भ में यह सत्य ही लिखा है कि–

राम तुम्हारा चरित स्वयं की काव्य है।

कोई कवि बन जाये सहज सम्भाव्य है।।

यद्यपि श्री रामचन्द्र की जीवनी महाभारत, जैन व बौद्ध मतों के धर्म ग्रन्थों, पुराणों, उप पुराणों तथा संस्कृत एवं हिन्दी आदि भारतीय भाषाओं की रामायणों में, रामचरित अथवा किसी न किसी रूप में विस्तृत एवं विषद् वर्णन उपलब्ध है। किन्तु इनमें साम्प्रदायिक लोगों द्वारा अपने मत की पुष्टी में रामायण के कथानक को घटा–बढा कर काल्पनिक प्रसंगों के साथ प्रस्तूत किया गया है। रामायण व महाभारत आदि ऐतिहासिक व धार्मिक ग्रन्थों एवं इन से सम्बधित पुस्तकों के अध्ययन की रूचि मुझे विद्यार्थी काल से अब तक निरन्तर बनी रही है। गत वर्षों से अपने आश्रम के पुस्तकालय में उपलब्ध बाल्मीकि रामायण को पुनः पढने की इच्छा जागृत हुई। दैवयोग से वर्ष 2009 फरवरी मास में एक घटना से प्रसंग वश प्रेरित होकर, मेरे हृदय में संगीतमय श्रीरामकथा लिखने की प्रेरेणा उत्पन्न हुई। वर्ष 2008 में मेरे 70 भजनों की पुस्तक 'ओम् भजन सुधा' प्रकाशित हो चुकी थी। अतः उससे प्रोत्साहित होकर मैं श्रद्धा, निष्ठा और विश्वास के साथ बाल्मीकि रामायण के शोधपूर्ण अध्ययन, अनुशीलन एंव पद रचना में पूर्ण मनोयोग से जुट गया। परमपिता परमात्मा की असीम कृपा, सहायता और आशीर्वाद के फलस्वरूप मास सितम्बर 2009 में संगीतमय श्रीरामकथा की रचना अपनी आशा के अनुरूप करने में सफल रहा।

तुलसीदास कृत रामचरित मानस व अन्य रामायणों में काल्पनिक प्रसंगों एवं प्रक्षेपों की भरमार है। केवल प्रक्षेप ही नही अपितु रामायण के उच्च चरित्रों को भी पशु–पक्षियों के रूपमें विकृत करके प्रस्तूत किया गया है। रामायण काल में विभिन्न क्षेत्रों में निवास करने वाले मानव जातियों के नाम– देव, गन्धर्व, यक्ष, नाग, किन्नर, मनुष्य, वानर, ऋक्ष, गृध्र, राक्षस, असुर व दानव आदि थे। पवनपुत्र हनुमान व सुग्रीव आदि वानर जाति अर्थात्–वनों में वास करने वाले नर/मानव। हनुमान जी चारों वेदों और व्याकरण के प्रकाण्ड विद्वान थे, ऐसा श्री राम ने भी स्वीकार किया था। हनुमान आदि को पूंछ नही थी। लांगुल नाम से वानर जाति का राष्ट्रीय चिन्ह था, जिसे सभी वानर सैनिक पीठ के पीछे मेखला से बान्धे रहते थे और उसकी रक्षा लिए वे अपने प्राणों का उत्सर्ग करने को भी तत्पर रहते थे।जाम्बवान् सुग्रीव की बुआ का पुत्र ऋक्ष

जाति से था। सम्पाति व जटायु दक्षिण भारत में गृधकूट नामक राज्य के राजा थे और राजा दशरथ के मित्र थे। गरूड़ प्रजापति कश्यप की पत्नि वनिता का पुत्र एवं भगवान् विष्णु के विमान का चालक एवं नागफाश अस्त्र के निराकरण का विशेषज्ञ था। देव भूमि हिमालय, अब तिब्बत के निवासी और प्रजापति कश्यप की पत्नि अदिति से उत्पन्न इन्द्र आदि देव कहलाये। दिति से दानव, दनु से दानव व राक्षस संस्कृति अपनाने से रावण आदि राक्षस बने। इसी प्रकार अन्य जातियों को भी समझना चाहिए।

संगीतमय श्रीरामकथा को काल्पनिक प्रसंगों और प्रक्षेपों से अछूता रखने का पूरा प्रयास किया गया है। संगीतमय श्रीरामकथा का राम दशरथ नन्दन, मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम, एक आज्ञाकारी पुत्र, स्नेही पितृ तुल्य भ्राता, वचनों पर दृढ़ सच्चा मित्र, आदर्श प्रजापालक राजा, एक पत्निनिष्ठ आदर्श पति, महान् धनुर्धारी, अजय योद्धा और वेद–वेदांगों का ज्ञाता आदि अनेक सदगुणों से विभूषित हैं। मुझे यह पूर्ण आशा और विश्वास है कि संगीतमय श्रीरामकथा को पढ़, सुन और गाकर आप अपने मन में आत्मिक आनन्द का अनुभव करेंगे और मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के पावन चरित को अपने हृदय एवं जीवन में आत्मसात् करके अपने जीवन को सफल एवं सार्थक करेंगे।

संगीतमय श्रीरामकथा का लेखन कार्य पर्ण होने पर मैं आर्य जगत् के दो विद्वानों सर्वश्री प. भरत लाल जी शास्त्री, वैदिक प्रवक्ता एवं वेदोपदेशक, हाँसी (हिसार) तथा आ. रामसुफल जी शास्त्री, वैदिक प्रवक्ता एवं प्रचार मन्त्री, आर्यसमाज, हाँसी (हिसार) का उनके सहयोग एवं प्रोत्साहन के लिए हृदय से आभारी हुँ। अन्त में, मैं पुनः परम दयालु, सच्चिदानन्द स्वरूप, परमपिता परमात्मा का बार–बार हृदय से नतमस्तक होकर धन्यवाद करता हुँ, जिनकी असीम कृपा, प्रेरणा एवं आशीर्वाद के फलस्वरूप मुझे संगीतमय श्रीरामकथा रूपी पावन प्रसाद मिला और मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि इस पावन प्रसाद को में जन–जन तक बांटू। इति ओम् शम्।

विनीत–

म. ओम् मुनि वानप्रस्थ
वैदिक भक्ति साधन आश्रम
आर्य नगर, रोहतक (हरियाणा)

31 दिसम्बर 2009
पौष मास की पूर्णिमा
विक्रमी संवत 2066

# ईश वन्दना

नमो नमः पावन परमेश्वर।
जय – जय हे तेरी जगदीश्वर।।

जगत् नियन्ता अन्तर्यामी।
सकल सृष्टि के तुम हो स्वामी।

दया सिन्धु हो तुम करूणाकर।।
जय–जय हे तेरी जगदीश्वर।।1।।

ज्ञान – ध्यान सब तेरा लावें।
शक्ति–भक्ति सब तुझ से पावें।

भव–भय भञ्जन मित्र कृपा कर।।
जय–जय हे तेरी जगदीश्वर।।2।।

योगीजन तुझको ही ध्यावे।
ऋद्धि–सिद्धि सब तुझ से पावें।

इष्ट देव हे महा योगेश्वर।।
जय–जय हे तेरी जगदीश्वर।।3।।

सृष्टि के हो तुम आधारा।
बहे ज्ञान की निर्मल धारा।

वेद ज्ञान दाता ब्रह्मेश्वर।।
जय–जय हे तेरी जगदीश्वर।।4।।

ओम् नाम तेरा प्रभु प्यारा।
भक्त जनों ने यही पुकारा।

भाग्य विधाता हे सर्वेश्वर।।
जय–जय हे तेरी जगदीश्वर।।5।।

। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।
बाल
काण्ड

# गीत–राम–चरित

सुनो रे भाई राम कथा सुखदाई।
मन–वच–कर्म से राम चरित को जीवन में अपनाई।।

राम कथा सुन मानव जागे।
पाप ताप जीवन से भागे।
सत्य धर्म उपजे हृदय में, प्रेम और करूणाई।।1।।

ऊंच–नीच यह पाप विचारा।
मानव बन मानव का प्यारा।
राम ने सब से प्रेम किया, नहीं भेद–भाव अपनाई।।2।।

मात–पिता, भ्राता, सुत, नारी।
सत्य धर्म पर बनो व्यवहारी।
शुद्ध रहे आचार–विचार तब राम–भक्त कहलाई।।3।।

राम भक्त का जीवन उज्जवल।
झूठ–कपट नहीं कोई छल–बल।
शुद्ध, सरल और सौम्य–सुखद गुण हृदय में अपनाई।।4।।

पाप मिटावे, वचन निभावे।
वो ही राम भक्त कहलावे।
भजते राम गायत्री निश दिन, ओम् नाम मेरे भाई।।5।।

## बाल श्रीराम
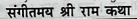
घुटनों के बल चले राम
तब माता देख मुस्काये।
ठुमक–2 जब चलने लगे,
पिता अंगुली पकड़ चलाये।

## मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम

उपनयन के बाद गुरू ने विद्या प्रारम्भ कराई।  
वेद–शास्त्रों और शस्त्रों की विद्या उन्हें सिखवाई।।  
अस्त्र–शस्त्र और युद्ध कला में थी प्रवीणता पाई।  
युवा कुमार, बल था अपार, धनुर्धारी कहलाई।।

## बाल काण्ड

मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।
दशरथ नन्दन श्री राम की पावन कथा सुनाते हैं ।।

* * *

प्रजापति ब्रह्मा से मरीचि व कश्यप ने वंश चलाया।
प्रथम राजा भगवान् मनु ने अयोध्या नगर बसाया।
मूर्धाभिषेक इक्ष्वाकु भूप से इक्ष्वाकु वंश कहलाया।
हुए राजा अनेक, रघु भी थे एक, राघव कहलाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।1।।

* * *

(प्रजापति कश्यप के पश्चात लगभग चालीस राजा इस वंश में उत्पन्न हुए, जिन में कुछ प्रसिद्ध राजा इस प्रकार हैं–विवस्वान, मनु, इक्ष्वाकु, बाण, त्रिशंकु, मान्धाता, भरत, सगर, दलीप, भगीरथ, रघु, ययाति, अज और दशरथ।)

* * *

सरयु नदी के तीर बसी एक अयोध्या नगरी प्यारी।
त्रेता युग में अज के पुत्र राजा दशरथ बलकारी।
प्रजापालक न्यायकारी राजा सत्य धर्म व्रतधारी।
रघुकुल की रीत, वचनों से प्रीत, सब जन गाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।2।

* * *

यथा राजा तथा प्रजा, यह रीत बड़ी है पुरानी।
स्वर्ग लोक सी सुन्दर नगरी अयोध्या बड़ी सुहानी।



। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

पाप – ताप से दूर प्रजा थी, धर्म – कर्म विज्ञानी।
धन–धान्य भरा, था राज्य खरा, नहीं दीन कहाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।3।।

* * *

श्रेष्ठ ऋषियों से शोभित थी राजा की परिषद सारी।
ऋषि वशिष्ठ और वामदेव, कात्यायन वेदाचारी।
जयन्त, विजय, सिद्धार्थ, सुमन्त से आठ अमात्य प्रभारी।
सब नीतिवान, योद्धा महान्, गुणवान कहाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।4।।

* * *

थी तीन रानियां भूप की, पतिव्रता सुन्दर सन्नारी।
बड़ी कौशल्या, मझली सुमित्रा, छोटी केकैयी प्यारी।
धर्म – कर्म में तत्पर रहती विदुषी विरांगना नारी।
महलों की शान, थी तीनों महान्, राजा उन्हें चाहते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।5।।

* * *

पुत्र हीन राजा के मन में था यह बड़ा अभाव।
युवा अवस्था बीत रही, नहीं मिटा सन्तति चाव।
गुरू वशिष्ठ से तब राजा ने मांगा उचित सुझाव।
अनुष्ठान करो, पुण्य दान करो, ऋषिवर समझाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।6।।

| जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम |

| जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम |

पुत्रेष्टि यज्ञ के ब्रह्मा बनें, ऋषिवर श्रृंगि महान्।
अंग देश में जाकर करें, राजा उनका गुणगान।
रोमपाद राजा के महल में, वे हैं विशेष महमान।
सब जान लिया और मान लिया, अंग देश में जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।7।।

* * *

रोमपाद से मिल दशरथ ने अपनी व्यथा सुनाई।
पुत्रेष्टि यज्ञ ही ऋषियों ने है उत्तम विधि बताई।
श्रृंगि ऋषि से हे राजन! यह मेरी विनय सुनाई।
अयोध्या में गमन,करें यज्ञ सम्पन्न,अनुमति ये चाहते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।8।।

* * *

विनय भाव से दशरथ ने की ऋषि से नमस्कार।
दयालु ऋषि ने तुरन्त की राजा की विनय स्वीकार।
पत्नी शान्ता संग चले ऋषि होकर रथ पर सवार।
अयोध्या आये, स्वागत पाये, महलों में जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।9।।

* * *

श्रृंगि ऋषि का अयोध्या में हुआ बड़ा आदर–सत्कार।
सरयु तट पर होने लगा तब यज्ञ भूमि विस्तार।
उत्तम सामग्री शोधन कर सब होने लगी तैयार।
राजा आये, सब भेंट लाये, हीरे–मोती वो लाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।10।।

अथर्ववेद मन्त्रों को स्वर में था ऋषियों ने गाया।
श्रृंगि ऋषि ने विधि-विधान से यज्ञ सम्पन्न कराया।
देवगणों ने स्वर्ण पात्र में उत्तम प्रसाद भिजवाया।
संकल्प फ़ला, प्रसाद मिला, ऋषि मंगल गाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।11।।

* * *

दिव्य खीर का राजा ने था किया अनुपम् बटवारा।
हर्षित हो सब खा गई, नहीं भेद और भाव विचारा।
दान-दक्षिणा में दशरथ ने कोष खोल दिया सारा।
आशीष मिला, गर्भाधान फला, देवगण हर्षाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।12।।

* * *

एक वर्ष के बाद महलों में, गूंजी थी किलकारी।
राजा-प्रजा सब हर्षित थे, खिली रघुकुल की फुलवारी।
चैत्र शुक्ला नवमीं को हुए श्री राम सत्य व्रतधारी।
हुए पुत्र चार, खुशी थी अपार, दशरथ हर्षाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।13।।

* * *

मात कौशल्या की ममता ने राम लल्ला को पाया।
सन्त स्वभाव भरत ने मां केकैयी का मन हर्षाया।
सुमित्रा मां की गोद में लक्ष्मण-शत्रु. का जोड़ा आया।
सुन्दर कुमार, खिले पुष्प चार, सब खुशी मनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।14।।

हर्षित राजा ने लालों को फिर अपने हाथ उठाया।
मधुमय स्वर्ण शलाखा से जिह्वां पर ओम् लिखाया।
लाड–प्यार से फिर दशरथ ने मधु व घृत चटाया।
हुआ नामकरण, था श्रेष्ठ वर्ण, कुल गुरू करवाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।15।।

* * *

घुटनों के बल चले राम तब माता देख मुस्काये।
ठुमक–2 जब चलने लगे, पिता अंगुली पकड़ चलाये।
चारों राजकुमारों को सब खेलत् देख हर्षाये।
सब होनहार, था सब को प्यार, वे जहाँ भी जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।16।।

* * *

प्रातः काल की शुभ बेला में माता कौशल्या अपने प्यारे राम लल्ला को जगा रही हैं–

## गीत शुभ प्रभात

जाग रे लल्ला मां जगाने को आई।
ऊषा किरण राम दर्शन को आई।।

उठ कर नमन् कर, सन्ध्या–हवन कर।
पावन ये बेला है भाग्य से आई।।







। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

गुरूओं की सीख मान, बुद्धि में भरले ज्ञान।
आदर से सब को हृदय में बिठाई।।

सज्जनों का धार संग, वीरों सी हो उमंग।
वेद की ऋचाएं दें घर - घर सुनाई।।

ओम्-ओम् सुबह-शाम, भजले प्रभु का नाम।
आनन्द घन प्रभु हृदय में समाई।।
* * *

उपनयन के बाद गुरू ने विद्या प्रारम्भ कराई।
वेद - शास्त्रों और शस्त्रों की विद्या उन्हें सिखाई।
अस्त्र - शस्त्र और युद्ध कला में थी प्रवीणता पाई।
युवा कुमार, बल था अपार, धनुर्धारी कहलाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द की गाथा हम गाते हैं।।17।।
* * *

एक दिवस ऋषि विश्वामित्र अयोध्या नगरी आये।
सभा छोड़ राजा दशरथ ऋषि के स्वागत में धाये।
ऋषि वशिष्ठ और वामदेव भी ऋषि दर्शन को आये।
किया आदर मान, ऋषि हर्षित जान,यह वचन सुनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द की गाथा हम गाते हैं।।18।।

महामुनि का आगमन, हुई कृपा हम पर महान्।
चरण धुलि से पावन हुआ यह रघुकुल जन्म स्थान।
अभीष्ट कार्य हम पूर्ण करें, आदेश आपका मान।
ऋषि हर्षाये, ये वचन सुनाये, सुनो राजन् कहते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।19।।

* * *

सिद्धाश्रम में कर रहे हम सिद्धि यज्ञ अनुष्ठान।
क्रोध रहित व श्राप रहित है यज्ञ का बड़ा विधान।
महाभयंकर राक्षस करते यज्ञ विध्वंस व्यवधान।
सुनो हे राजन्,यज्ञ के काजन,राम–लखन को चाहते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।20।।

* * *

सुन कर बात ऋषि की राजा दशरथ थे अकुलाये।
मेरा राम अभी बालक है, नहीं युद्ध कला उसे आये।
करूं विनय हे ऋषिवर, आप सारी सेना ले जायें।
वचनों से भ्रष्ट, हुए ऋषि रूष्ट, दशरथ घबराते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।21।।

* * *

(श्रीराम की आयु उस समय लगभग 25 वर्ष थी, किन्तु श्री राम से अत्यधिक मोह के कारण राजा दशरथ उसे बालक कह रहे हैं और राम के स्थान पर यज्ञ रक्षार्थ सेना भेजना चाहते हैं। किन्तु ऋषि विश्वामित्र का उद्देश्य केवल यज्ञ रक्षा नहीं था, कुछ और भी था। बात बिगड़ती देख कर ऋषि वशिष्ठ ने राजा दशरथ को समझाया।)

ऋषि वशिष्ठ बोले राजन् तुम व्यर्थ रहे भय खाये।
रघुकुल की यह रीत नहीं जो वचन देय फिर जाये।
इसी में है कल्याण राम का जो ऋषिवर संग जाये।
ये हैं समर्थ, नहीं हो अनर्थ, डर दूर भगाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।22।।

* * *

हर्षित हो तब दशरथ ने राम – लखन को बुलाया।
राजकुमारों ने ऋषिवर के चरणों में सीस झुकाया।
सिर सूंघा और प्यार किया, राजा ने स्नेह दिखाया।
मुनिवर के साथ, दो चले भ्रात, सरयु तट पर आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।23।।

* * *

राम – लखन दोनों चले, बन ऋषिवर के अनुगामी।
कन्धे तूणीर, कर धनुष ले, बने संकल्पो के स्वामी।
ऋषिवर ने प्रदान की उन्हें दो विद्या बहुनामी।
नौका सवार, हुए गंगा पार, एक आश्रम आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।24।।

* * *

(सरयु नदी के किनारे छः कोस चलने के बाद ऋषि विश्वामित्र ने उन्हें आचमन आदि करवा कर "बला और अतिबला" नाम की दो विद्यायें प्रदान की, जो अनेक दिव्य विद्याओं का समूह थी। उन विद्याओं के प्रभाव से निन्द्रा, प्रमाद, मूर्च्छित व ज्वर आदि अवस्था में रक्षा होती थी। गंगा पार कर प्रथम रात्रि एक आश्रम में बिताई।)

प्रातः काल सन्ध्या वन्दन कर चले ताटका वन में।
महा भयंकर यक्षणी का, आतंक था उस वन में।
बड़ा खोफ छाया था उसका ऋषि–मुनि जन–जन में।
उसे नष्ट करो, वन मुक्त करो, ऋषिवर समझाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।25।।

* * *

ताटका वन में पहुँच राम ने किया धनुष सन्धान।
महा भयंकर यक्षणी आई दौड़ भूकम्प समान।
दोनों बाजु काट राम ने एक छाती पर मारा बाण।
धरती पे गिरी और तुरन्त मरी, ऋषि हर्ष मनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।26।।

* * *

(ताटका वध के उपरान्त ऋषि राम–लखन को लेकर अपने सिद्धाश्रम में आये। सर्व प्रथम उन्हें दिव्यास्त्र प्रदान करके उनके संचालन का एवं तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का भी ज्ञान कराया। तत्पश्चात् दीक्षा में प्रवेश कर पांच दिन मौन व छटे दिन राम–लखन को आश्रम की सुरक्षा में नियुक्त कर यज्ञ अनुष्ठान प्रारम्भ किया।)

* * *

राम – लखन को संग ले, ऋषि सिद्धाश्रम आये।
दिव्य अस्त्रों से दोनों के धनुष – तुणीर सजाये।
किया यज्ञ प्रारम्भ विध्वंस को राक्षस दौड़े आये।
उड़े आंधी धूल, शिला और शूल, आतंक मचाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।27।।

मानव अस्त्र से मारीच को दिया कोसों दूर गिराये।
आग्नेय अस्त्र से सुबाहु के प्राणों को दिया उड़ाये।
बाकि राक्षस वाव्य अस्त्र से यम के द्वार पहुंचाये।
हुआ यज्ञ रक्षित, पूर्ण सुरक्षित, ऋषि हर्ष मनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।28।।

* * *

यज्ञ सम्पन्न हुआ निर्विघ्न, हुए ऋषि – मुनि प्रसन्न।
महामुनि ने राम – लखन का, किया प्रेम अभिनन्दन।
हाथ जोड़ कर राम नें किया ऋषि से एक निवेदन।
आदेश करें, या यहीं रहें, ऋषि जैसा चाहते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।29।।

* * *

कहा ऋषि ने राम – लखन से सुनो कुमार रघुराया।
जनकपुरी में राजा जनक ने है धंनुष यज्ञ रचाया।
आज तलक शिव धनुष को कोई वीर उठा नहीं पाया।
आमन्त्रण मिला, निमन्त्रण मिला, चलो हम भी जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।30।।

* * *

सुनकर बात ऋषि की दोनों राम – लखन मुस्काये।
ऋषि आज्ञा को धार के अपने धनुष व बाण उठाये।
शिव धनुष को देखन की, बड़ी इच्छा रही सताये।
चले हो तैयार, खुशी थी अपार, मिथिला को ज़ाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।31।।

| जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम |

| जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम |

जनक पुरी से पहले वन में एक आश्रम आया।
किसका आश्रम ऋषिवर ये, क्यों है वीरान सा छाया।
तब ऋषिवर ने राम–लखन को अहिल्या प्रसंग सुनाया।
इन्द्र ने छला, था श्राप मिला, ऋषि तप को जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।32।।

* * *

श्राप ऋषि का पूर्ण करने प्रायश्चित की राह अपनाई।
वायु भक्षण और यज्ञ भस्म से अपनी देह लिपटाई।
करो दर्शन ऋषि पत्नी के चरणों में सीस झुकाई।
था देव योग, बना मिलन योग, ऋषि गौतम आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।33।।

* * *

आश्रम मे प्रवेश कर किये देवी अहिल्या दर्शन।
चरण स्पर्श कर ऋषि पत्नी के, किया राम ने वन्दन।
त्याग व तप का फल मिला, हुए पुनः पति के दर्शन।
दर्शन करके, प्रसन्न करके, फिर मिथिला आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।34।।

* * *

राम–लखन को संग ले ऋषि मिथिला नगरी आये।
राजा जनक तब यज्ञशाला में आदर–सत्कार को आये।
सुन्दर राजकुमारों को लख, जनक राज हर्षाये।
किसके कुमार, ऋषि हो उपकार, हम जानना चाहते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।35।।

दशरथ नन्दन राम यहाँ शिव धनु. दर्शन को आये।
कर आदेश जनक ने शिव के धनुष को लिया मंगाये।
छः पहियों पर रखी मंजूषा, कई व्यक्ति खींच ले आये।
चले श्रीराम, कर ऋषि प्रणाम, धनु. दर्शन पाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।36।।

* * *

ऋषि की आज्ञा पाये राम ने शिव का धनुष उठाया।
बायें हाथ में धनुष ले और दायें धनु. डोर चढाया।
दो टुकड़े हुए शिव धनुष के, सारा मण्डप गुञ्जाया।
हुई पुष्प वर्षा, सब जन हर्षा, जनक खुशी मनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।37।।

* * *

अति आनन्दित सीता हुई और वरमाला ले हाथ।
गले डालने श्री राम के वह चली मात के साथ।
पुष्प वर्षा होने लगी और गूञ्जा जय - जय नाद।
सीता ने राम को, राम सिया को वरमाला पहनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।38।।

* * *

राजा जनक ने आदर सहित अयोध्या दूत पठाया।
बारात सहित दशरथ आये और आकर हर्ष मनाया।
राम सहित चारों भाईयों का विवाह संस्कार कराया।
हुए बिदा सभी, थे जनक दुःखी, नयन नीर बहाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।39।।

। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

मिथिला से हुए बिदा राह में एक मुसीबत आई।
धूल उड़ाते बीच राह में दिये परशुराम दिखाई।
मान भंग किया राम ने उनका और बरती करूणाई।
भय–भञ्जन हुआ, फिर गमन किया, दशरथ हर्षाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।40।।

* * *

उधर अयोध्या में स्वागत की होने लगी तैयारी।
सुन्दर तौरण द्वार बने, सजे आगन–महल–अटारी।
नव पुत्र वधुओं पर तीनों माता जाती थी बलिहारी।
हुए गीत–संगीत, विवाह की रीत, मंगल–मोद मनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।41।।

* * *

केकैयी भ्राता युद्धाजित् था अयोध्या नगरी आया।
कुमार भरत को नानाश्री ने था अपने पास बुलाया।
संग भरत के शत्रुघ्न भी चलने को अकुलाया।
दोनों कुमार, चले हो तैयार, ननिहाल में जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।42।।

( बाल काण्ड समाप्त )

। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

## ★ भजन ★

आज प्रभु तोहे बिनती सुनाऊं।
बिनती सुनाऊं तोहे रिझाऊं।।

जन्म – जन्म की प्रीत हमारी।
बिछुड़ के तुमसे भए दुःखारी।
छोड़ तुझे अब किस दर जाऊं।।

क्या है नाता तुम से दाता।
मात – पिता तुम बन्धु – भ्राता।
सब रिस्तों की लाज निभाऊं।।

भटक गया था मोह – माया में।
दाग लगाये इस काया में।
राग – द्वेष की क्या कथा सुनाऊं।।

तुमने मुझ को बहुत सम्भाला।
मैं ही निकला भोला – भाला।
सांझ भई घर वापिस आऊं।।

दर्श बिना ये प्यासे नयना।
तेरे बिना अब चैन मिलेना।
कैसे तिहारे दर्शन पाऊं।।

* * *

। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।
अयोध्या
काण्ड

## ★ राम वन गमन ★

अपने पिता के वचन
निभाने राम चले वनवास।
पीछे-पीछे जनक सुता
और लखन चले बन दास।

। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

## अयोध्या काण्ड

मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।
दशरथ नन्दन श्री राम की पावन कथा सुनाते हैं।।

* * *

पावन चैत्र मधु मास है दशरथ ने यह बात विचारी।
राजतिलक कर राम का करूँ वन जाने की तैयारी।
गुरू वशिष्ठ से तब राजा ने मन की बात उच्चारी।
हों राजा राम, करूँ वन में धाम, प्रभु भजन सुहाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।1।।

* * *

देव प्ररेणा से दशरथ ने सब मन की बात बताई।
निर्णय के लिए परिषद् की बैठक तुरन्त बुलाई।
रामचन्द्र हों राजा सब ने अपनी खुशी जताई।
हो राजतिलक, नहीं कोई झिझक, निर्णय यह सुनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।2।।

* * *

राजतिलक कल राम का यह सब को बात बताई।
राजमहल और प्रजा में थी अति प्रसन्नता छाई।
तीनों मातायें यह सुन कर थी फूली नहीं समाई।
राम राजा बनें, प्रजा पालक बनें, सब जन ये चाहते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।3।।

* * *

देवमति और भाग्य गति पर है किसका अधिकार।
दासी मन्थरा शस्त्र बनी, किया राजतिलक प्रतिकार।

रानी केकैयी के चिन्तन पर, किया बार–बार प्रहार।
बुद्धि उलटी, केकैयी पलटी, रंग–भंग हो जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।4।।

* * *

कोप भवन में जा बैठी वह रूष्ठ रानी नादान।
राजा को बुलवा कर उसने मांगे दो वरदान।
राजतिलक हो भरत का, यह पहला वरदान।
वर दूजा खास, मिले राम वनवास, सुन राजा रोते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।5।।

* * *

सुन कर मूर्छित हो गए और मुख से निकला राम।
दासी भेजकर केकैयी ने वहाँ तुरन्त बुलाया राम।
सुन आदेश पिता का राम ने आकर किया प्रणाम।
हुए राजा दीन, ज्यों तड़पे मीन, नहीं बोल ही पाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।6।।

* * *

करूण अवस्था देख पिता की, चिन्तित हुए श्रीराम।
हाथ जोड़ कर कहा पिता से, हे तात! खड़ा मैं राम।
किस कारण हे पिता श्री! बने दीन – हीन निष्काम।
नहीं बोल रहे, मुख खोल रहे, नहीं होश में आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।7।।

* * *

जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

कहा केकैयी ने तब राम से, सुनो लगाकर ध्यान।
पूर्व काल में महाराज ने मुझे दिये थे दो वरदान।
दोनों उन्हीं वरों का आज मुझे हो आया है ध्यान।
दो वर मांगे, तुमरे आगे, नहीं कहना चाहते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।8।।

* * *

राजतिलक हो भरत का, यह पहला वरदान।
चौदह वर्ष वनवास राम को, दूजा यह वरदान।
अपने पिता के वचनों का अब तुम रखो सम्मान।
वन गमन करो, नहीं मनन करो, महाराज ये चाहते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।9।।

* * *

हाथ जोड़ कर राम ने तब किया विनम्र प्रणाम।
हे तात! आपके वचनों का सम्मान करेगा राम।
हंसी-खुशी जाऊँगा वन में, न करूँ कोई कोहराम।
वन गमन करूँ, नहीं मनन करूँ, बस वचन निभाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।10।।

* * *

जहाँ आनन्द उल्हास था, वहाँ रोते सब नर-नारी।
सुध-बुध खोये मात कौशल्या, हुई बेबस और लाचारी।
संज्ञा हीन राजा तड़पे, ज्यों मीन मरे बिन वारी।
हे भाग्य विधाता, जग के दाता, क्या खेल रचाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।11।।

(राम वनवास की सूचना मिलते ही सीता जी श्री राम के पास आ गई और हाथ जोड़ कर निवेदन करने लगी।)

* * *

जनक सुता तब आ गई श्री रामचन्द्र के पास।
संग चलूंगी आपके और गमन करूँ वनवास।
नाथ आपके चरणों में ही मैं सदा करूंगी वास।
नहीं महल–माड़ी, रथ या गाड़ी, बिन पति सुहाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।12।।

* * *

सुनो सिया तुम बावरी, अति कोमल सुकुमारी।
महाभयंकर राक्षस वर में, हाथी, शेर चिन्घारी।
वन के कष्टों को सहना नहीं बस की बात तुम्हारी।
संग मात रहो, सेवा–सुश्रषा करो, यही धर्म बताते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।13।।

* * *

बिना पति के महल भी लागे निरजन सुनसान।
संग आपके वन – पर्वत सब लगेंगे महल समान।
छोड़ मुझे वन गमन किया तो नहीं बचेंगे प्राण।
हुए राम विवश, नहीं भाग्य पे वश, कैसे कर पाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।14।।

* * *

(तत्पश्चात् लक्ष्मण भी श्री राम के पास आ गये और उनके साथ वन जाने का आग्रह करने लगे।)

तब लक्ष्मण ने राम के लिए चरण पकड़ दोऊँ हाथ।
सुख – दुःख में यह अनुज सदा रहा आपके साथ।
मुझे अयोध्या छोड़ कर वन गमन करेंगे भ्रात।
मैं साथ चलूँ, हरगिज न टलूँ क्यों छोड़ना चाहते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।15।।

* * *

वनवास मिला है मुझको भैया तुम क्यों कष्ट उठाते हो।
मात–पिता की सेवा में यहाँ क्यों नहीं भाग्य बनाते हो।
माता सुमित्रा की आज्ञा बिन तुम कैसे वन में जाते हो।
मुझे आज्ञा मिली, वो मात भली, अब वन को जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।16।।

* * *

माता–पिता को नमन् कर, चले रथ पे होके सवार।
बिलख – बिलख कौशल्या रोये, गये दशरथ मूर्छा धार।
पीछे – पीछे प्रजा दौड़े, रही राम – राम सब पुकार।
बिन राम–सिया, नहीं जाये जिया, दशरथ यूं रोते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।17।।

* * *

विधि का अदभुत् बना रे विधान।।
राजतिलक के बदले में किया राम ने वन प्रस्थान।।

* * *





। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

मानव जीवन पल–पल बदले कर्मों का सब खेल।
मातम छाया राजमहल में, हुआ दुःखों का मेल।
कभी राजा कभी रंक बनाया, महल कभी सुनसान।।
विधि का अद्भुत बना रे विधान।। . . . . . ।।18।।

* * *

अपने पिता के वचन निभाने राम चले वनवास।
पीछे–पीछे जनक सुता और लखन चले बन दास।
राम–राम मत जाओ वन में, होगा यह अहसान।।
विधि का अद्भुत बना रे विधान।। . . . . . ।।19।।

* * *

भारी मन से सुमन्त ने फिर रथ के घोड़े चलाये।
तमसा को कर राम फिर गंगा तट पर आये।
रात यहीं विश्राम करेंगे, सुमन्त सुनो कर ध्यान।।
विधि का अद्भुत बना रे विधान।। . . . . . ।।20।।

* * *

समाचार सुन राम से मिलने, निषादराज वहाँ आये।
आलिंगन कर राम ने उसको पास में लिया बिठाये।
प्रातः गंगा पार कराओ मित्र, होगा यह अहसान।।
विधि का अद्भुत बना रे विधान।। . . . . . ।।21।।

लक्ष्मण और गुहराज ने मिल कर घास की शय्या बनाई।
प्रातः काल उठ स्नान–ध्यान कर, बात सुमन्त समझाई।
अयोध्या वापिस जाकर रखना, मात–पिता का ध्यान।।
विधि का अद्भुत बना रे विधान।। . . . . . . . ।।22।।

* * *

रथ के घोड़े आंसु बहायें, नहीं चलने को तैयार।
राम–लखन और सीता ने की नाव से गंगा पार।
आंख में आंसु भर सुमन्त ने अयोध्या किया प्रस्थान।।
विधि का अद्भुत बना रे विधान।। . . . . . . . ।।23।।

* * *

मर्यादा पालक रामचन्द की गाथा हम गाते हैं।।
दशरथ नन्दन श्रीराम की पावन कथा सुनाते हैं।।

* * *

रात्रि बिता कर प्रातः काल चले आगे राम रघुराई।
भारद्वाज मुनि के आश्रम में, तीनों ने रात बिताई।
प्रातः काल ऋषि के चरणों में राम ने विनय सुनाई।
एक धाम कहें, जहाँ जाके रहें, पर्ण कुटी बनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द की गाथा हम गाते हैं।।24।।

* * *

ढाई योजन दूर यहाँ से, एक चित्रकूट नामक धाम।
पावन रमणीक स्थल में, तुम जाकर रहो हे राम।
कन्द–मूल, फल–फूल सभी का वहाँ है सारा आराम।
उन्हें राह बता और दिशा दिखा, ऋषि वापिस आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द की गाथा हम गाते हैं।।25।।



। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

राह में यमुना नदी को किया नाव बना कर पार।
चित्रकूट पर पहुँच बनाया पर्ण कुटी का विचार।
सायं काल तक वीर लखन ने की दो कुटिया तैयार।
बना प्यारा धाम, यह कहते राम, दिन यहीं बिताते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।26।।

* * *

उधर सुमन्त ने भारी मन से किया अयोध्या प्रवेश।
नर–नारी सब रो रहे, था वहाँ शोक भरा परिवेश।
राजमहल में पहुँच सुमन्त ने दिया श्रीराम सन्देश।
हा! राम–राम, कहाँ गए राम, सब यह चिल्लाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।27।।

* * *

दुःखी कौशल्या से दशरथ ने की हाथ जोड़ अरदास।
मुझ पापी के कारण ही गए राम–सिया वनवास।
क्यों मृत्यु का मिलता नहीं है मुझे शीघ्र सहवास।
एक पाप किया, अब याद किया, प्रभु पास बुलाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।28।।

* * *

पितृ भक्त श्रवण कि हत्या हुई युवा दशरथ के हाथ।
मात–पिता ने श्राप दिया, अब याद आई वह बात।
तड़प–तड़प कर निकले प्राण, दशरथ के आधी रात।
आई प्रातः काल, हुआ बुरा हाल, सब रूदन मचाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।29।।


। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

शव को रखा एक पात्र में जिसमें था तेल विशेष।
कुमार भरत को लाने हेतु दिया दुतों को आदेश।
सात दिनों के बाद भरत ने किया अयोध्या में प्रवेश।
सूनी थी डगर, रोता था नगर, कुछ समझ न पाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथ हम गाते हैं।।30।।

* * *

सूना महल पिता का देख, गए भरत माता के द्वार।
देख भरत को केकैयी ने किया बहुत लाड व प्यार।
मेरे हृदय में हे माता, क्यों हो रहा शोक संचार।
कहाँ पिताश्री, दुःख से जो घिरी, नगरी को पाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।31।।

* * *

पिता तुम्हारे प्यारे पुत्र, अब गए हैं स्वर्ग सिधार।
अटल विधान विधि का उस पर है किसका अधिकार।
राम–सिया कहते–कहते गए छोड़ हमें मझधार।
दो वर मांगे, तेरे भाग्य जागे, तुम्हें राजा बनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।32।।

* * *

सुनकर बात पिता मृत्यु की हो गए भरत निढाल।
फूट–फूट कर रोने लगे और मां से किया सवाल।
राम–सिया का समाचार, मुझे मात कहो तत्काल।
वर कथा सुनो, तुम राजा बनो, राम वन को जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।33।।



। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

संग राम के सीता और लक्ष्मण भी गए हैं वन में।
कौसलाधीश तुम भरत बनो, इच्छा थी मेरे मन में।
सुनकर बात मात की लग गई आग भरत के तन में।
बड़ा पाप किया, कुल घात किया, क्रोधित हो जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।34।।

* * *

कथा वरों की जान भरत को हो आया अति रोश।
माता नहीं तुम डायन हो, पति घातक विष बेल विशेष।
मैं अनुचर श्री राम का, करूँ वन में तुरन्त प्रवेश।
हैं राजा राम, नहीं मेरा काम, सिया-राम लौटाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।35।।

* * *

(अपनी माता केकैयी को खरी-खोटी सुनाने के बाद भरत माता कौशल्या के पास गए।)

* * *

मात कौशल्या के चरणों में गए भरत टिकाने माथा।
मैं निर्दोष हूँ बड़ी मैय्या, मेरी मात बनी कुमाता।
राम-सिया को लौटाने अब वन में जाऊँगा माता।
चरणों से लिपट, रोये फूट-फूट, सब धीर बन्धाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।36।।

* * *

(गुरूजनों के समझानें पर पहले भरत ने अपंने पिता का दाह-संस्कार किया और फिर श्रीराम को लौटाने के लिए वन को चल पड़े।)

दुःखित मन से भरत ने किया पिता का दाह–संस्कार।
तेरह दिन के बाद किया फिर वन जाने का विचार।
राम–सिया को लौटाने, चले हो रथों पर सभी सवार।
उस राह गए, जहाँ राम भये, गंगा तट आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।37।।

* * *

गुरूजनों के संग भरत जब गंगा तट पर आये।
निषादराज शंकित हुए और भेद जानने आये।
भरत से मिल कर उसने सारे अपने भ्रम मिटाये।
लिया गले लगा, सब भ्रम भगा, गंगा पार कराते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।38।।

* * *

निषादराज को संग ले की भरत ने गंगा पार।
भारद्वाज ऋषि को नमन् कर पाया उनसे सत्कार।
चित्रकूट की राह चले हो सभी रथों पर सवार।
कब राम मिलें और गले मिलें, मन में हर्षाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।39।।

* * *

(अयोध्या की सेना का लश्कर ज्यों–2 चित्रकूट की ओर बढ़ रहा था, वन प्राणीयों में भगदड़ मच गई। सेना की हलचल का शोर चित्रकूट में राम–लक्ष्मण के कानों तक पहुँच रहा था। राम के कहने पर जब लक्ष्मण ने वृक्ष पर चढ़ कर देखा तो उसे अयोध्या की सेना के ध्वज दिखाई दिये। लक्ष्मण ने समझा भरत सेना लेकर युद्ध करने आ रहा है।)

सेना की हलचल से मचा था जंगल में कोहराम।
क्रोधित लक्ष्मण कह रहे, अब धनुष उठाओ राम।
आज पापी उस भरत का कर देंगे काम तमाम।
तब बोले राम, तुम रहो निष्काम, नहीं क्रोध में आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।40।।

* * *

तभी अचानक चित्रकूट पर पहुँचे भरत कुमार।
नयनन् नीर बहाय राम से करते भरत पुकार।
आलिंगन कर राम ने किया भरत से प्यार–दुलार।
पिता नहीं रहे, हमें छोड़ गए, सुन राम भी रोते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।41।।

* * *

राम–लखन और सीता ने गुरूजनों के पांव पखवारे।
पीछे – पीछे तीनों माता, संग अनुज शत्रुघ्न प्यारे।
मात कौशल्या को ममता वश बहे नयन जल धारे।
लिया अंक लगा,आंचल था भिगा,सब दिल भर आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।42।

* * *

विधि का अद्‌भुत बना रे विधान।।
राजतिलक के बदले में किया राम ने वन प्रस्थान।।

* * *

| जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम |

हाथ जोड़ कर भरत ने किया राम से ये अनुरोध।
मैं सेवक हूँ आपका मुझे नहीं राज्य का बोध।
गुरूजनों और माताओं के अब पूरे करो अरमान।।
विधि का अद्भुत बना रे विधान।। . . . . . . . ।।43।।

* * *

मेरी माता केकैयी को अब माफ करो श्री राम।
राज आपका, प्रजा आपकी, लौट चलो हे राम।
इस अनुचर पर हे करूणाकर होगा यह अहसान।।
विधि का अद्भुत बना रे विधान।। . . . . . . . ।।44।।

* * *

कहा भरत से राम ने अब वन ही मेरा वास।
श्रेष्ठ पिता के वचन निभाने आया मैं वनवास।
तुम भी उनके वचनों का अब भरत करो सम्मान।।
विधि का अद्भुत बना रे विधान।। . . . . . . . ।।45।।

* * *

देख स्थिर वचनों पे राम को करते भरत प्रणाम।
चरण पादुकाओं पर अपने अब पांव टिकाओ राम।
एक दिवस का विलम्ब किया तो नहीं मिलेंगे प्राण।।
विधि का अद्भुत बना रे विधान।। . . . . . . . ।।46।।

* * *

आंख में आंसू, सिर पे पादुका, भरत चले गुण गाए।
गुरूजनों और माताओं संग भरत अयोध्या आए।
चरण पादुका संग भरत ने किया नन्दी ग्राम प्रस्थान।।
विधि का अद्भुत बना रे विधान।। . . . . . . . ।।47।।




। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।
दशरथ नन्दन श्री राम की पावन कथा सुनाते हैं।।

* * *

(भरत के साथ माताओं, गुरूजनों व अयोध्या वासियों के वापिस लौट जाने के कुछ दिन पश्चात राम ने अनुभव किया कि यहाँ आस-पास आश्रमों में निवास कर रहे तपस्वियों के व्यवहार में अजीब सा परिवर्तन आ रहा है। तब राम ने बड़े ऋषि से सब रहस्य स्वयं जान लिए।)

* * *

राक्षस खर के आतंक से रहे ऋषि-मुनि सब भाग।
भरत मिलन की याद से यहाँ फिर जागे अनुराग।
सोच - समझ कर राम ने किया चित्रकूट परित्याग।
सब जान लिया, प्रस्थान किया, अत्रि आश्रम आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।48।।

* * *

अत्रि-अनुसुइया चरणों में किया राम ने जा प्रणाम।
राम-लखन और सीता ने किया रात्रि वहीं विश्राम।
सति अनुसुइया ने सीता को दिया पति धर्म पैगाम।
थी दोनों सति, सत्य धर्म गति, हृदय मिल जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।49।।

* * *


| जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम |

प्रातः काल सन्ध्या-वन्दन कर ऋषि को सीस नवाया।
अनुसुइया ने सीता को सुन्दर अलंकारों से सजाया।
सजी-धजी सीता को देख श्री राम का मन हर्षाया।
ऋषि नमन् किया,फिर गमन् किया,दण्डक वन जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।50।।

* * *

दण्डक वन में असुरों का आतंक बड़ा था भारी।
आगे लक्ष्मण पीछे राम और बीच में जनक दुलारी।
दण्डक वन को देख राम ने मन में बात विचारी।
है वन गहरा, राक्षसी पहरा, चौकस हो जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।51।।

( अयोध्या काण्ड समाप्त )

। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

## ★ भजन ★

परम पिता हे परम सुखदाई।
कैसे आऊं पास तिहारे, माया की है बाड़ लगाई।।

जन्म–जन्म से भटक रहा हूँ।
मोह–माया में अटक रहा हूँ।
बन्धन मेरे ढीले कर दो, दयानिधे क्यों देर लगाई।।

कुछ मेरा अज्ञान सताये।
काम–क्रोध विवेक को खाये।
राग–द्वेष ने मन को बान्धा, कुछ भी देता नहीं सुझाई।।

बिन सत्संग विवेक मिलेना।
ज्ञान बिना अब राह मिलेना।
वेद ज्ञान को दीप जलाकर, भरो हृदय में नव अरूणाई।।

ओम्–ओम् दिन–रात जपूं मैं।
पल–पल, छिन–छिन याद करूं मैं।
जीवन पथ पर चलते–चलते, भोर से अब लो सांझ हो आई।।

* * *

। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।
। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

# अरण्य काण्ड

## सीता हरण

सुन्दर रूप धर मृग का गया पंचवटी के पास।

कूद - फांद कर मारीच ने दिया सीता को उल्हास।

कहे जानकी राम से, प्रिय न करना मुझे निराश।

स्वर्णमयी हिरण, सूरज सी किरण, हम पालना चाहते हैं।।

## अरण्य काण्ड

मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।
दशरथ नन्दन श्री राम की पावन कथा सुनाते हैं।।

* * *

राम–लखन और सीता ने किया दण्डक वन प्रवेश।
ऋषि आश्रमों को देख कर हुआ मन में हर्ष विशेष।
ब्रह्मनिष्ठ ऋषियों से भरा था यह सारा प्रदेश।
आश्रम आये, आदर पाये, वहाँ रात बिताते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।1।।

* * *

महावन में पहुँच राम ने देखा एक असुर विशाल।
नरभक्षी उस दानव की थी देह अति विकराल।
महाभयंकर शब्दों से वह मचा रहा था बवाल।
राक्षस गरजा, अब दूंगा सजा, कटु वचन सुनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।2।।

* * *

जटा वल्कल धारण किये और धनुष–बाण ले हाथ।
कौन कहाँ से आये हो और यह नार तुम्हारे साथ।
ऋषि–मुनियों को खाने वाला, मैं हूँ राक्षस विराध।
रक्त पान करूँ और प्राण हरूँ नहीं दया दिखाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।3।।

(तब श्री राम ने अपना परिचय बताते हुए कहा कि–)

इक्ष्वाकु वंश के क्षत्रिय हम राम – लखन हैं नाम।
क्षात्र धर्म का पालन करने वन में बनाया धाम।
शूल भयंकर फैंका उसने, जिसे तुरन्त काटते राम।
राम–लखन उठा, कन्धे पर बिठा, महावन में जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।4।।

* * *

(इसी दौरान बातों – बातों में विराध ने राम को अपना यह भेद बता दिया कि वरदान के अनुसार उसे किसी अस्त्र– शस्त्र से नहीं मारा जा सकता और तब–)

* * *

एक–एक बाजु राम–लखन ने दी विराध की तोड़।
मुर्छित होकर गिर पड़ा, नहीं प्राण रहा था छोड़।
गढा खोद लक्ष्मण ने उस पर डाले पत्थर–रोड़।
फिर आगे चले, शरभंग मिले, ऋषि आश्रम आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।5।।

* * *

शरभंग ऋषि के चरणों में किया तीनों ने प्रणाम।
स्वागत करके कहा ऋषि ने सुनो ध्यान से राम।
मुझे प्रतीक्षा थी आपकी, अब जाऊं ब्रह्म के धाम।
किया अग्नि प्रवेश, जो बचा शेष, ब्रह्म धाम को जातें हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।6।।

| जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम |

| जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम |

(शरभंग ऋषि के आश्रम से चल कर तीनों सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम में आये।)

* * *

दण्डक वन के तपस्वी आये सब श्री राम के पास।
रक्षा करो श्री राम हमें यह राक्षस देते हैं त्रास।
बाहें उठा कहा राम ने, मैं करूंगा इनका विनाश।
सब जान लिया, अभय दान दिया, अब वचन निभाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।7।।

* * *

(कुछ दिन वहाँ बिता कर तीनों अन्य आश्रमों में चले गये।)

* * *

आगे पीछे राम-लखन और बीच में जनक दुलारी।
सुन्दर नदियां, पर्वत और आश्रमों को रहे निहारी।
पावन अलौकिक आश्रमों में थे ऋषि-मुनि तपधारी।
दस वर्ष बिता, राम-लखन-सीता, फिर आगे जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।8।।

* * *

राम-सिया, लक्ष्मण सहित गए अगस्त्य मुनि के धाम।
हाथ जोड़ कर किया तीनों ने ऋषि चरणों में प्रणाम।
देख तुम्हें प्रसन्न हुए, रघुकुल पुरूषोत्तम श्री राम।
किया प्रेम सत्कार, हुई खुशी अपार, ऋषिवर हर्षाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।9।।







। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

अगस्त्य मुनि के आश्रम में तीनों ने रात बिताई।
प्रातः काल ऋषि वन्दन करने पहुँचे राम रघुराई।
एन्द्रय धनुष और बह्मास्त्र ऋषिवर ने भेंट चढ़ाई।
आशीष मिला, कर सीस मिला, पंचवटी में जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।10।।

* * *

(बिदा लेते समय महर्षि अगस्त्य ने राम से कहा कि पंचवटी तुम्हारे लिए उपयुक्त स्थान है। अतः हे राम! आप तीनों वहाँ पर्ण कुटी बनाकर निवास करें। ऋषि की आज्ञा मान कर तीनों पंचवटी की ओर चल पड़े।)

* * *

पंचवटी के निकट राम को मिले गृध्रराज जटायु।
मित्र तुम्हारे पिता का, अब इस वन में बीते आयु।
पूर्व राजा गृधकूट हूँ और नाम है मेरा जटायु।
यहाँ वास करो, विश्वास करो, उन्हें यह समझाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।11।।

* * *

सुन्दर पर्ण कुटी बना वहाँ, किया तीनों ने वास।
शरद ऋतु गई बीत आ गया ऋतु हेमन्त का मास।
सूरज की किरणों से चमकी ओस भरी हरी घास।
सूरज तपता, अच्छा लगता, सब पुष्प खिलाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।12।।

सीता और लक्ष्मण सहित एक दिन बैठे श्री राम।
दुष्ट राक्षसी शूर्पणखा ने आकर किया वहाँ कोहराम।
मैं पत्नी बनूँ आपकी, मुझ से विवाह करो तुम राम।
सुनो हे नारी, ये मेरी सन्नारी, जिसको हम चाहते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।13।।

* * *

मेरे संग पत्नी सीता है, तुम जाओ लखन के पास।
पत्नी रहित लक्ष्मण ही तेरी पूरी करें सब आस।
सुन कर बात राम की कुलटा गई लखन के पास।
मैं नार नवेली, तेरे साथ अकेली, चल ब्याह रचाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।14।।

* * *

कुरूपा शूर्पणखा से तब लक्ष्मण ने किया परिहास।
सुनो सुन्दरी बात मेरी, मैं लक्ष्मण राम का दास।
पुनर्निवेदन करो राम से, जीतो उनका विश्वास।
थी बड़ी कपटी, सीता पे झपटी, श्री राम बचाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।15।।

* * *

तुरन्त झपट कर लक्ष्मण ने दिये काट नाक व कान।
दुष्ट भयानक शूर्पणखा लगती डायन के समान।
रोती बिलखती राक्षसी गई भाग बचा कर जान।
गई खर के पास, होगा विनाश, क्रोधित हो जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।16।।


। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

खून से लथपथ राक्षसी गई खर–दूषण के पास।
भेजे चौदह राक्षस करने राम – लखन का ग्रास।
राम ने तीखे बाणों से किया उनका तुरन्त विनाश।
थर–थर कांपी, वापिस भागी, खर क्रोध में आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।17।।

* * *

(भावी युद्ध की आशंका से राम ने लक्ष्मण को पर्वत की गुफा में जाकर सीता की रक्षा करने को कहा और स्वयं युद्ध के लिए तैयार हो गए।)

* * *

चौदह हजार राक्षसों को ले खर–दूषण चढ़ कर आये।
चारों तरफ से घेर राम को घातक हथियार चलाये।
राम ने तीखे बाणों से दिये राक्षस काट गिराये।
चले तीर–भाले, सब काट डाले, दिव्य बाण चलाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।18।।

* * *

दूषण और त्रिशरा को दिया राम ने युद्ध में मार।
गदा भयंकर फैंक कर किया खर ने तुरन्त प्रहार।
दो तीखे बाणों से राम ने की उसकी गदा बेकार।
एक तीखा बाण, हरे खर के प्राण, देवगण हर्षाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।19।।

* * *

तीन घड़ी में राम ने दिये चौदह सहस्त्र राक्षस मार।
निष्कंटक यह वन हुआ और छाई खुशी अपार।
पुष्प वर्षा की देवों ने, करते ऋषि–मुनि सत्कार।
सुखधाम बना, गुणग्राम बना, सब जन हर्षाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।20।।

* * *

राक्षस संहार से बचा अकम्पन भाग के लंका आया।
जन स्थान के संहार का रावण को हाल सुनाया।
एक अकेले राम ने सब को मौत की नींद सुलाया।
बल है अपार, नहीं पारावार, प्रलय सी मचाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।21।।

* * *

युद्ध नहीं बस बुद्धि का यह काम है राक्षसराज।
अनुपम सुन्दरी सीता का तुम हरण करो महाराज।
बिन सीता नहीं जी सके यही राम मृत्यु का राज।
छल–कपट करो, सीता को हरो, यही जतन बताते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।22।।

* * *

तुरन्त गमन कर रावण मारीच आश्रम आया।
सीता हरण के काम में, हे बन्धु रचो तुम माया।
समझा–बुझाकर मारीच ने रावण को लंका लौटाया।
नहीं मिला चैन, रावण बेचैन, प्रतिशोध वो चाहते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।23।।

(इसी विषय पर रावण अपने सचिवों से विचार–विमर्श कर रहा था, तभी वहाँ शूर्पणखा पहुंच गई।)

रोती – बिलखती शूर्पणखा आई रावण के पास।
राक्षसों का क्यों करवाते हे राक्षसराज उपहास।
सीता तुम्हारे योग्य है, उसे रखो अपने रणवास।
नही तुम्हें ज्ञान, मेरा हुआ अपमान, भ्राता कहलाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।24।।

* * *

भर आदेश में दशानन् फिर गया मारीच के पास।
सुनो मारीच तुम ध्यान से, मत करना मुझे निराश।
वरना इन हाथों से तेरा है निश्चित आज विनाश।
था काल बली, नहीं एक चली, मारीच घबराते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।25।।

* * *

(मारीच ने रावण को बहुत समझाया कि राम से बैर मोल लेना अच्छा नहीं है, किन्तु काल के वश रावण नहीं माना तब मारीच ने रावण की अपेक्षा राम के हाथों मरने के साथ–2 रावण के विनाश का रास्ता भी प्रशस्त करने का निश्चय किया और रावण के साथ चल पड़ा।)

सुन्दर रूप धर मृग का गया पंचवटी के पास।
कूद – फांद कर मारीच ने दिया सीता को उल्हास।
कहे जानकी राम से, प्रिय न करना मुझे निराश।
स्वर्णमयी हिरण, सूरज सी किरण, हम पालना चाहते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।26।।

समझाया तब लक्ष्मण ने मृग को मायावी जान।
सीता आग्रह पर किया तब राम ने वहाँ प्रस्थान।
लुकता–छिपता मायावी मृग जा निकला दूर स्थान।
एक बाण मारा, हा! लखन पुकारा, मारीच भरमाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।27।।

* * *

मरते समय मारीच ने हा! लखन, हा! सिया पुकारा।
शंकित हो गए राम तभी, क्यों यह आर्त नाद उच्चारा।
मृग का रूप छोड़ मारीच ने असली रूप था धारा।
था कपट जाल, राक्षस विकराल, षड़यंत्र रचाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।28।।

* * *

आर्तनाद सुन सिया ने, कहा लखन सुनो कर ध्यान।
संकट में भ्राता तेरे, वहाँ तुरन्त करो प्रस्थान।
कहा लखन ने सीता से, नहीं राम के कोई समान।
तुम धीर धरो, ना फिकर करो, लक्ष्मण समझाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।29।।

* * *

भला – बुरा कह सीता ने, लक्ष्मण को तुरन्त पठाया।
सन्यासी के वेष में तब रावण वहाँ पर आया।
भिक्षा मांग कर दुष्ट ने फिर नीच कर्म अपनाया।
पापी रावण, किया सिया हरण, चढ़ रथ पे जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।30।।

करूण विलाप सुन सिया का जटायु आया बचाने।
रोक रास्ता रावण का लगा बातों से समझाने।
नहीं माना तब दुष्ट पर लगा घुंस्से–लात चलाने।
धनु. रथ तोड़ा, घायल थोड़ा, रावण हो जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।31।।

* * *

वृद्ध जटायु लड़ता रहा और युद्ध किया घमासान।
हाथ–पैर दिये काट रावण ने कर दिया लहु–लुहान।
रक्षा में उसने सिया की, न्यौछावर कर दी जान।
धरती पे पड़ा और तड़पा बड़ा, सुध–बुध खो जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।32।।

* * *

रोती–बिलखती सीता को ले चला गगन से रावण।
वन, पर्वत और सागर लांघे, पहुँचा लंका के प्रांगण।
अशोक वाटिका में सीता को तुरन्त ले गया रावण।
भयभीत किया, अब सुनो सिया, रावण समझाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।33।।

* * *

उधर मारीच का रूप देख, राम शीघ्र वापिस आये।
बीच राह में मिले लक्ष्मण, देख राम अति अकुलाये।
जनकसुता को छोड़ अकेली क्यों लक्ष्मण वन में आये।
अब कुशल नहीं, शुभ मंगल नहीं, वे दौड़े आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।34।।

| जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम |

| जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम |

पर्ण कुटी में पहुँच राम ने जनक सुता को पुकारा।
वन–उपवन और गिरि, सरोवर ढूंढा नदी किनारा।
सीते –सीते राम पुकारें, बहे नयन जल धारा।
हे वृक्ष–लता, कहाँ गई सिया, आवाज लगाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।35।।

* * *

चलते–चलते बीच राह मिले घायल पड़े जटायु।
रक्त अधिक बह जाने से सब ढीले हुए सनायु।
सीता हरण की कथा सुना की पूर्ण अपनी आयु।
सीता का हरण, पापी रावण, दिशा दक्षिण जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।36।।

* * *

लकड़ी इकट्ठी कर लक्ष्मण ने चिता एक बनाई।
पिता समान जटायु की श्री राम ने चिता जलाई।
आंखों में आंसू भर रघुवर ने उसकी करी बिदाई।
रक्षा में सिया, दिये प्राण गवा, अति शोक मनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।37।।

* * *

दाह–संस्कार कर जटायु का आगे कदम बढाया।
घोर वन में प्रवेश कर दक्षिण का रूख अपनाया।
कबन्ध राक्षस ने बाहों में राम–लखन को उठाया।
दी बाजु काट, धड़ था विराट, मुश्किल से हिलाते हैं।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।38।।

राम–लखन को जान कबन्ध ने अपना रहस्य बताया।
एक गड्ढे में डाल लक्ष्मण ने ऊपर काष्टों को लगाया।
अग्नि में अर्पण होकर, नया रूप कबन्ध ने पाया।
हुआ श्राप मुक्त, बना प्रभु भक्त, कुछ रहस्य बताते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।39।।

* * *

भावी बातें भविष्य की सुनो राम–लखन कर ध्यान।
मतंग आश्रम में जाकर पाओ तुम शबरी से सम्मान।
ऋष्यमूक पर्वत पर मिलेंगे सुग्रीव और हनुमान।
वे धर्म जीत, बनो उनके मीत, सीता ढूंढवाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।40।।

* * *

तुरन्त गमन कर राम–लक्ष्मण मतंग वन में आये।
चारों तरफ फूलों की खुशबु थी मन को रही लुभाये।
सुखद शान्ति बिखर रही वहाँ और राग पपीहा गाये।
मिली एक डगर, रहे फूल बिखर, रस्ता महकाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।41।।

* * *

आश्रम द्वार खड़ी शबरी रही देख राम की राह।
पीत वस्त्र धारण किये दो वीरों पर पड़ी निगाह।
वर्षों से प्रतीक्षा थी जिनकी, अब पूर्ण हुई वह चाह।
शबरी पुलकित, हुआ मन हर्षित, श्री राम जो आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।42।।

## ★ गीत ★

आज मोरे घर राम पधारे।
राह निहारूं, डगर बुहारूं,
चुन – चुन कांटे राह सवारूं।।
आज मोरे घर राम पधारे।।43।।

* * *

आशीर्वाद गुरू का मिला था।
अन्त समय में यही कहा था।
सेवा से सब काज संवारे।।
आज मोरे घर राम पधारे।।44।।

* * *

शीतल जल से चरण परवारूं।
राम – लखन वाणी से पुकारूं।
आश्रम में महमान पधारे।।
आज मोरे घर राम पधारे।।45।।

* * *

मीठे – मीठे फल मैं खिलाऊं।
शीतल जल गगरी से पिलाऊं।
शबरी के अब भाग्य संवारे।।
आज मोरे घर राम पधारे।।46।।

* * *


। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

तन मोरा माटी का बन्धन।
सेवा में तन – मन यह अर्पण।
मोक्ष गमन का समय बना रे।।
आज मोरे घर राम पधारे।।47।।

* * *

मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।
दशरथ नन्दन श्रीराम की पावन कथा सुनाते हैं।।

* * *

शबरी के सत्कार से हुए राम – लखन प्रसन्न।
पूछा राम ने शबरी से, नहीं तप में कोई बिघ्न।
तप मेरा हुआ सफल राम जी हुए तुम्हारे दर्शन।
हुआ जीर्ण बदन, परलोक गमन, हम करना चाहते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।48।।

* * *

कहा राम ने शबरी से, पाया तुमसे बहुत सम्मान।
हंसी–खुशी अब गमन करो, मन इच्छित इष्ट स्थान।
अग्नि में फिर शरीर त्याग, किया मोक्ष धाम प्रस्थान।
किया शबरी गमन् और राम–लखन पम्पासर आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।49।।

* * *

( अरण्य काण्ड समाप्त )

# किष्किन्धा काण्ड

परिचय पाकर राम-लखान
का किया सादर प्रणाम।
मन्त्री वानरराज का हूँ
मैं और हनुमान है नाम।
वनवासी सुग्रीव ने
मुझको सौंपा है यह काम।

# किष्किन्धा काण्ड

मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।
दशरथ नन्दन श्रीराम की पावन कथा सुनाते हैं।।

भक्त तपस्वनी शबरी को कर बिदा चले श्रीराम।
पम्पासर में स्नान कर, कुछ समय किया विश्राम।
जनक सुता के विरह में फिर व्यथित हुए श्रीराम।
वनवास दिया, कहाँ गई सिया, दिन याद वो आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।1।।

* * *

जनक सुता बिन हे लक्ष्मण, अब जीना है दुस्वार।
उनके पिता के सामने, अब कैसे पाऊं सत्कार।
वन गमन में संग थी, अब कहाँ गई सन्नार।
फिर गमन किया और मनन किया, लक्ष्मण समझाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।2।।

* * *

कहा लखन ने राम से, क्यों करते शोक–सन्ताप।
जनक सुता मिल जायेगी, नहीं दीन–हीन हैं आप।
वानरराज सुग्रीव से कर लो, चल कर मेल–मिलाप।
पुरूषार्थ करें, न व्यर्थ डरें, काम सब बन जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।3।।


। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

पम्पासर को छोड़ कर चले आगे राम रघुराई।
ऋष्यमूक पर्वत पर दोनों ने अपनी नजर उठाई।
वानरराज सुग्रीव उन्हें कहीं दिये नहीं दिखाई।
उन्हें कहाँ ढूंढें, कैसे ढूंढें, नहीं समझ वे पाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।4।।

* * *

(ऋष्यमूक पर्वत पर बैठे सुग्रीव ने राम – लक्ष्मण को उस क्षेत्र में घूमते देख लिया और उनके मन में आशंका उत्पन्न हो गई।)

* * *

वानर राज सुग्रीव ने देखे वहाँ दो युवा धनुर्धारी।
शंकित होकर तुरन्त सभी सचिवों से बात विचारी।
दुष्ट बाली के भेजे लगते, बन जायें न मौत हमारी।
अब भाग चलो, मलयगिरि चलो, सब जान बचाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।5।।

* * *

भाग – दौड़ कर मलयगिरि पहुंचे सब वनवासी।
कहा सुग्रीव ने हनुमान से, तुम हो पूर्ण विश्वासी।
वेष बदल कर पता करो, ये फिरते कौन प्रवासी।
किया विप्र वेष, लेकर सन्देश, हनुमंत वहाँ जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।6।।

मधुर वचनों से हनुमंत ने की अनुपम वार्तालाप।
धनुष–बाण ले हाथ में, कौन वल्कल धारी हैं आप।
श्रेष्ठ पुरूष क्या देश है या देव पुरूष हैं आप।
अनुरोध किया, न विरोध किया, प्रसन्नसा गाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।7।।

* * *

दिव्य पुरूष लगते हो दोनों या कोई देव–गन्धर्व।
किस हेतु यहाँ भ्रमण करते, स्थान कौन है ध्रुव।
स्नेह भरे तेजस्वी चेहरे, नयनों में अनोखा पर्व।
नहीं मौन रहो, परिचय तो कहो, हम सुनना चाहते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।8।।

* * *

(तब श्रीराम के संकेत पर लक्ष्मण ने हनुमान को श्रीराम व अपना परिचय और वहाँ आने का कारण बताया।)

* * *

अयोध्या पति दशरथ के पुत्र राम – लखन हैं नाम।
श्रेष्ठ पिता के वचन निभाने वन को बनाया धाम।
श्री राम भार्या थी संग में, जिसे ढूंढ रहे अहराम।
छल–कपट किया, सिया हरण हुआ, रावण ले जाते हैं।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।9।।

* * *



। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

परिचय पाकर राम–लखन का किया सादर प्रणाम।
मन्त्री वानरराज का हूँ मैं और हनुमान है नाम।
वनवासी सुग्रीव ने मुझको सौंपा है यह काम।
लिया वेष बदल, सब हो मंगल, हनुमंत समझाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।10।।

* * *

दुर्दिनों की मार से करते सुग्रीव यहाँ पर निवास।
अपने भ्राता बाली पर उन्हें नहीं रहा विश्वास।
राम–सुग्रीव की मित्रता अब आये दोनों को रास।
अब शीघ्र चलें, न विलम्ब करें ऋष्यमूक पे जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।11।।

* * *

शरीर बढ़ाया हनुमंत ने और हो गए अति विशाल।
चढ़ा कन्धों पर दोनों को और गमन किया तत्काल।
मलयगिरि पर हनुमंत ने कहा सुग्रीव से सब हाल।
बड़ा मान किया, सम्मान किया, सुग्रीव हर्षाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।12।।

* * *

(राम–लक्ष्मण को ऋष्यमूक पर्वत पर छोड़ कर हनुमान मलयगिरि पर्वत पर गए और सुग्रीव को राम–लक्ष्मण के बारे में पूरी जानकारी दी। तब सभी ऋष्यमूक पर्वत पर आ गये। वहाँ आ कर सुग्रीव ने श्रीराम से कहा–)

* * *

। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

मुझ वनवासी का श्रीराम किया बहुत बड़ा सम्मान।
मैत्री हाथ यह थाम कर करो आर्य मेरा कल्याण।
हर्षित हो श्रीराम करते सुग्रीव से हृदय मिलान।
मैत्री सच्ची, अग्नि साक्षी, तब हनुमान जलाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।13।।

* * *

हनुमान ने सुना दी रघुवर आपकी करूण कहानी।
छल – कपट, सीता हरण और रावण की मनमानी।
शीघ्र कष्ट हों दूर आपके और मिले सिया महारानी।
हम खोज करें, हर रोज करें, सीता ढूंढवाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।14।।

* * *

दुःख तेरा अब मेरा है, सुनो मित्र सुग्रीव सुजान।
दुष्ट आचरण बाली को मैं वध कर भेजूं श्मशान।
प्यारी पत्नी मिलेगी तुमको और मिले राज्य सम्मान।
वचनों से प्रीत, रघुकुल की रीत, हम वचन निभाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।15।।

* * *

आकाश मार्ग से बलात् हरी, हम देखी एक सन्नारी।
करूण स्वर में फूट–फूट कर रोती थी सुकुमारी।
बान्ध वस्त्र में डाले आभूषण, उनको जरा निहारी।
रखे सुरक्षित, करें शान्त चित्त, हम अभी दिखवाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।16।।




। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

(सुग्रीव गुफा में जाकर आभूषणों की पोटली ले आया और खोल कर श्रीराम के सामने रख दी।)

देख सिया के आभूषण नयन भर आये नीर।
कान के कुण्डल और कंकणों को पहचानो तुम वीर।
कहा लखन ने भ्रात राम से, आर्य धरो तुम धीर।
चरणों में ध्यान, नूपुरों का ज्ञान, बस यही बताते हैं।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।17।।

* * *

मित्र सुग्रीव के कहने पर दिया त्याग राम ने शोक।
संकट में प्रिय मित्र मिले, ज्यों मिले आनन्दी लोक।
कहते राम बाली को मार, मैं हरूं तुम्हारा शोक।
ये बैर कथा, अब कहो सखा, हम सुनना चाहते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।18।।

* * *

बाली बैर कथा का राम से करते सुग्रीव बखान।
एक नारी के लिए मायावी ने लिया बैर बाली से ठान।
आधी रात असुर ने आकर किया बाली युद्ध आह्वान।
बाली गरजा, राक्षस भागा, एक गुफा में जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।19।।

* * *

(मैं भी बाली के पीछे-2 दौड़ा। बाली ने मुझे गुफा के द्वार पर बिठा कर प्रतीक्षा करने को कहा और स्वयं गुफा के अन्दर चला गया।)

अंगले दिवस भयंकर गर्जन सुनी गुफा के द्वार।
रक्त धारा बहने लगी तभी उस गुफा के द्वार।
मैं समझा भ्राता बाली को दिया क्रुर असुर ने मार।
भय से कांपा, गुफा द्वार ढ़ांपा, वापिस आ जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।20।।

* * *

खाली सिंहासन देख प्रजा ने मुझे राजा दिया बना।
एक दिवस बाली आया, लिया सचिवों को बन्दी बना।
हाथ जोड़ मैने बाली से सब किस्सा दिया सुना।
नहीं बात सुनी, पत्नी भी छिनी, मुझे वन में भगाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।21।।

* * *

चार सचिवों को संग ले ऋष्यमूक पर्वत पर आया।
दुष्ट बाली के डर से मैं नहीं कभी चैन से सोया।
कहा राम ने सुग्रीव से अब अन्त बाली का आया।
करो बल वर्णन, बाली का मरण, हम जतन बताते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।22।।

* * *

महाभयंकर दुन्दुभि असुर ने बाली को ललकारा।
बदला लेने मायावी का वह दुष्ट असुर फुंकारा।
जोश में भर कर बाली ने था उससे युद्ध स्वीकारा।
चले घुंस्से-लात और घात-प्रतिघात, दोनों भिड़ जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।23।।

हुआ भयंकर युद्ध दोनों में, लगा बाली पड़ने भारी।
उठा–पटक कर भूमि पर राक्षस की हड्डियां तोड़ी।
मृत असुर को उठा बाहों में फेंका एक योजन दुरी।
हुआ रक्त संचित, आश्रम दूषित, ऋषि क्रोध में आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द की गाथा हम गाते हैं।।24।।

* * *

जिसने यह दुष्कर्म किया, वह मतंग वन न आये।
मतंग ऋषि का श्राप सुन कर वानरराज घबराये।
इसी लिए यहाँ आकर हमने अपने प्राण बचाये।
नहीं चैन मिले, दिन–रात घुले, हम दुःख से जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द की गाथा हम गाते हैं।।25।।

* * *

असुर पिंजर को राम ने तब पांव का अंगूठा लगाया।
तनिक ईशारे से पिंजर को सौ धनुष दूर गिराया।
कहा सुग्रीव ने इस पिंजर का भार कम हो आया।
यह वृक्ष खड़े, हैं बड़े–बड़े, बल इन पे दिखाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द की गाथा हम गाते हैं।।26।।

* * *

सात साल वृक्ष सामने, खड़े अपना सीना तान।
बाली अपनी शक्ति का करता इन पर अनुमान।
एक हाथ से वृक्ष को कर देता पतझड़ के समान।
सब पात झड़े, रहे ठूंठ खड़े, बल बाली बताते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द की गाथा हम गाते हैं।।27।।

बैर कथा, बल पराक्रम लिया राम ने बाली का जान।
सप्त साल वृक्षों पर किया श्री राम ने बाण संधान।
एक बाण से काटे सारे, यह अचरज हुआ महान्।
संतुष्ट हुआ, बल पुष्ट हुआ, सुग्रीव हर्षाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।28।।

* * *

कहा राम ने सुग्रीव से चलो नगरी करो ललकार।
छुपकर हम वृक्षों की ओट करें बाली पर प्रहार।
किष्किन्धा में पहुँच सुग्रीव ने भरी भारी हुंकार।
बाली आया, रण में छाया, सुग्रीव भाग के जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।29।।

* * *

भारी दुर्गत देख सुग्रीव की नहीं किया राम ने वार।
हम शक्ल दोनों भाई, करते किस पर फिर प्रहार।
भूल–चूक से सुग्रीव तुम्हीं पर हो सकता था वार।
एक चिन्ह दिया, उसे भिन्न किया, और पुनः लड़ाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।30।।

* * *

शक्ति पाकर श्री राम से की सुग्रीव ने फिर ललकार।
तारा रानी कहे बाली से, मत करो आज तकरार।
लेकिन बाली सहता कैसे सुग्रीव की यह हुंकार।
मल्ल युद्ध हुआ, बाली क्रुद्ध हुआ, सुग्रीव घबराते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।31।।

देख खतरे में मित्र को किया राम ने बाण संधान।
लगा छाती पर बाण बाली को हो गया लहु–लुहान।
आहत होकर गिरा धरा पर, आये संकट में प्राण।
किया छुप के वार, लज्जा अपार, नहीं वीर कहाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।32।।

* * *

सामने आकर लड़ते राम, तभी तुम वीर कहाते।
किस कारण यह घात किया वह मुझको भी बतलाते।
जनक सुता संग पापी रावण को तेरी शरण में लाते।
आघात कड़ा, था घाव बड़ा, फिर चुप हो जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।33।।

* * *

कहा राम ने बाली से तुम धर्म–कर्म क्या जानों।
पाप कर्म जो करते रहे, अब उनको भी पहचानों।
पुत्र वधु सम भ्रात पत्नी का आदर करना जानो।
जो पाप किया, सो दण्ड दिया, इसे न्याय बताते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।34।।

* * *

इक्ष्वाकु वंश का राज्य यहाँ है भूमण्डल पर आज।
प्रतिनिधि बन राजा भरत के हम आये वानरराज।
तुमने किया विद्रोह तभी तो दण्ड दिया है आज।
बड़ी भूल हुई, प्रतिकूल हुई, बाली पछताते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।35।।

आर्त नाद में बाली ने की राम से करूण पुकार।
क्षमा मांगी सुग्रीव से, हुई हम पर भाग्य की मार।
अंगद को तुम देना भ्राता, अपने पुत्र सम प्यार।
हुए नयन सजल और मन निर्मल, सुग्रीव भी रोते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।36।।

* * *

करूण विलाप करती तारा, आई बाली के पास।
पुत्र अंगद था साथ में, उड़े उनके होश – हवास।
छाती लिपट तारा रोये, अंगद चरणों के पास।
हे प्राणनाथ, क्यों छोड़ा साथ, नहीं वचन सुनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।37।।

* * *

रोती–बिलखती तारा को लगे हनुमान समझाने।
देवी अब तुम धीर धरो, नहीं शोक करो अज्ञाने।
समझदार है वही जगत् में जो भावी धर्म को जाने।
कर्त्तव्य करो, नहीं शोक वरो, फल कर्म से आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।38।।

* * *

सब दिन होते न एक समान।।
कल तक जो गरजा करता था, पड़ा वो मृत समान।।

* * *



। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

अन्तिम सांस ले रहा बाली, करूणा जागी मन में।
दया–धर्म का ज्ञान हुआ ज़ब रक्त रहा नहीं तन में।
प्रेम भरे तब वचन कहे, अब सुनो सुग्रीव सुजान।।
सब दिन होते न एक समान।। . . . . . . ।।39।।

* * *

बुद्धिमति तारा से भैया करना सद्–व्यवहार।
वीर पुत्र अंगद से करना निज सुत सा तुम प्यार।
बल–बुद्धि और शौर्य में है अंगद मेरे समान।।
सब दिन होते न एक समान।। . . . . . . . . ।।40।।

* * *

स्वर्णमयी यह दिव्य माला धारण करो सुग्रीव।
सासों की डोरी टूटी और उड़ा परवेरू जीव।
हा–हाकार करें वनवासी सब रोयें अनाथ समान।।
सब दिन होते न एक समान।। . . . . . . . . ।।41।।

* * *

मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।
दशरथ नन्दन श्रीराम की पावन कथा सुनाते हैं।।

* * *

आदर सहित राजा बाली का दाह संस्कार कराया।
राम की आज्ञा से सुग्रीव को वनवासी राजा बनाया।
विधिवत् अंगद् का युवराज पद पर अभिषेक कराया।
प्यारी रूमा मिली, तारा संग चली, सुग्रीव हर्षाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।42।।

कहा राम ने सुग्रीव से अब ऋतु चौमासा आया।
सागर, भूमि, नभ–मण्डल में आतंक मेघों का छाया।
वर्षा काल के बाद सीता अन्वेषण विचार बनाया।
नगरी में रहो, आनन्द करो, हम पर्वत पे जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।43।।

* * *

(सुग्रीव अपनी दोनों रानियों के साथ राजमहल में रहने लगा और राम–लक्ष्मण ऋष्यमूक पर्वत की गुफा रह कर चौमासा बीतने की प्रतीक्षा करने लगे। राम को रह–रह कर जनकसुता की याद आ रही थी।)

* * *

## ★ राम विरह गीत ★

कारे – कारे बदरा घिर – घिर आए।
याद सिया की मन तड़पाए।।

न जाने किस हाल में होगी।
किस विधि दुःखड़ा सहती होगी।
नयनों से जल भर–भर आए।। याद सिया की . .।।44।।

घिर – घिर आए बदरा कारे।
जीवन में छाये अन्धियारे।
ऋतु चौमासा बीता जाए।। याद सिया की . .।।45।।




। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

जनक सुता बिन मुश्किल जीना।
एक–एक दिन यूं लगे महीना।
विरहा दिल में हूक उठाए।। याद सिया की . .।।46।।

* * *

आश – निराश में झूल रहा हूँ।
प्रभु भजन भी भूल रहा हूँ।
कौन सिया का पता बताए।। याद सिया की . .।।47।।

* * *

मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।
दशरथ नन्दन श्रीराम की पावन कथा सुनात हैं।।

* * *

चौमासा गया बीत मगर सुग्रीव को होश न आया।
मद–मस्ती में डूबा रहा, राजकाज का ध्यान भुलाया।
प्यारी रूमा पत्नी संग, तारा का प्यार भी पाया।
मदमस्त हुआ, कामासक्त हुआ, नहीं होश में आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।48।

* * *

बुद्धिमान हनुमान ने जाकर सुग्रीव को चेताया।
चौमासा गया बीत राम के काम को तूने भुलाया।
राम कृपा से ही राजन्, वनवासी राज्य है पाया।
अब चेत करो, न अचेत रहो, नहीं वचन भुलाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।49।।

हित वचन हनुमंत के सुग्रीव को समझ में आये।
सभी वनवासी वीरों को लिया किष्किन्धा में बुलाये।
सेनापति ने सभी वानरों को दी राजाज्ञा भिजवाये।
न विलम्ब करें, वरना दण्ड भरें, आदेश ये जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।50।।

* * *

वर्षा ऋतु बीत चुकी अब निर्मल हुआ आकाश।
कामासक्त सुग्रीव हो गया अपने वचनों से उदास।
जाओ लक्ष्मण चेताओ, नहीं उसको होश-हवास।
हुआ स्वार्थ सिद्ध,नहीं अब सुध-बुध,उसे होश में लाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।51।।

* * *

क्रोधित लक्ष्मण चल पड़ा नगरी किष्किन्धा ओर।
क्रुद्ध लखन को देख कर, वनवासी मचायें शोर।
कहा अंगद से लक्ष्मण ने सुग्रीव बना मन मोर।
सन्देश कहो, यह विशेष कहो, क्यों वचन भुलाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।52।।

* * *

संदेश लेकर अंगद ने सुग्रीव को दिया सुनाए।
नींद से जागा वानरराज, कहा मेरी क्या है खताए।
शान्त करो लक्ष्मण को तारा, सब प्रेम से हाल बताए।
फिर मैं भी मिलूँ और साथ चलुँ नहीं समय गंवाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।53।।

विनम्र भाव से तारा रानी आई वीर लखन के पास।
आदर–सत्कार कर लक्ष्मण का पाया उनसे विश्वास।
वीर लखन क्यों क्रोधित हैं, किया किसने उन्हें निराश।
उपकार किया, नहीं बिसार दिया, अब वचन निभाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।54।।

* * *

कहा लखन ने तारा से सुग्रीव गया सब भूल।
राग–रंग में डूबा है, किया काम वचन प्रतिकूल।
चेताने आया हूँ उसको, अब काम करे अनुकूल।
रहा समय बीत, यह कैसी प्रीत, सुग्रीव निभाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।55।।

* * *

आसक्ति का कारण सुग्रीव की, दिया तारा ने बता।
राम के वचनों को हे लक्ष्मण, सुग्रीव नहीं है भूला।
वानर वीरों को सुग्रीव ने लिया सभी दिशा से बुला।
नहीं क्रोध करो, तुम सुबोध रहो, राजा से मिलाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।56।।

* * *

(उसी समय सेनापति ने आकर यह समाचार दिया कि सभी दिशाओं से वनवासी वीर लाखों की संख्या में किष्किन्धा पहुँच गए हैं।)

* * *

तारा के संग लक्ष्मण ने किया राजमहल प्रवेश।
वानरराज सुग्रीव से मिल कर दिया श्रीराम संदेश।
प्रेम भाव से सुग्रीव ने किया लक्ष्मण का मान विशेष।
संदेह मिटा, विश्वास बढा, ऋष्यमूक पे जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द की गाथा हम गाते हैं।।57।।

* * *

राम की आज्ञा से सुग्रीव ने खोजी दल चार बनाये।
पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण में, चारों दिशा पठाये।
सेना नायकों संग हजारों वनवासी वीर भिजवाये।
प्रस्थान करो और ध्यान धरो, मास अवधि बताते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द की गाथा हम गाते हैं।।58।।

* * *

वानरराज को हनुमान पर थां पूरा विश्वास।
अपनी बुद्धि से हनुमान तुम करना खोज प्रयास।
राम को भी उसकी शक्ति पर था अटूट विश्वास।
मुदिका देकर और समझाकर, सब दल भिजवाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द की गाथा हम गाते हैं।।59।।

* * *

वन, पर्वत, नदियाँ और सागर, देखी तंग गुफाएं।
ग्राम, नगर व जल–थल सारे खोजी सभी दिशाएं।
तीन दल बैरंग लौटे, ढूंढ कर अपनी सब सीमाएं।
दल एक रहा, वह कहाँ गया, यह बात बताते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द की गाथा हम गाते हैं।।60।।

दक्षिण दिशा अंगद के दल ने खोजे सभी स्थान।
भूख-प्यास से व्याकुल थे, नहीं रहा समय का ज्ञान।
लम्बी एक गुफा में पहुँचे, जहाँ देखा अजब स्थान।
एक योगिनी मिली, थी बड़ी भली, दुःख अपना बताते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।61।।

* * *

फल और जल से तपस्विनी ने किया आदर-सत्कार।
कथा-व्यथा सब सुनकर उनकी किया बड़ा उपकार।
आंख करा कर बन्द, उन्हें दिया भेज गुफ़ा के पार।
सागर तट था, निरजन घट था, नहीं समझ वे पाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।62।।

* * *

हताश-निराश हो वनवासी गए बैठ वृक्ष के पास।
आगे सागर, पीछे मौत, अब नहीं जीवन की आस।
रामकथा सुन जाम्बवान् से उनका फिर जागा विश्वास।
सीता की खोज,यह वानर फौज, कुछ कर नहीं पाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।63।।

* * *

(पास ही पर्वत की एक गुफा में गृध्रराज जटायु के अग्रज वृद्ध सम्पाति रहते थे। वानर वीरों की बातचीत उसके कानों में पड़ रही थी। रामकथा में जटायु का नाम सुन कर वह उत्सुकता वश उनसे मिलने आया और उनसे अपने भाई जटायु के बारे में पूछा।)

* * *

| जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम |

| जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम |

राम कथा सुन मिलने आये वृद्ध गृध्रराज सम्पाति।
अनुज जटायु वध कथा सुन, उनकी आंखें भर आती।
जनक सुता लंका में है, मेरी दिव्य दृष्टि यह बताती।
अब सागर पार, हुआ यह विचार, बल अपना बताते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।64।।

* * *

सब ने अपना बल बताया, पर चुप बैठे हनुमान।
पवन पुत्र क्यों मौन साधे, यह पूछ रहे जाम्बवान्।
तेज–गति, बल–बुद्धि में नहीं तुमसा कोई महान्।
उठो वीर हनुमान, राम कार्य महान्, तुम से ही होते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।65।।

* * *

( किष्किन्धा काण्ड समाप्त)
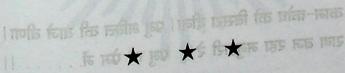
## ★ भजन ★

प्रभु के प्रेम में सब कुछ भूला, भूला सुध-बुध सारी रे।
मन मन्दिर में आनन्द छाया, छाई अनोखी खुमारी रे।।

प्रभु मिलन की प्यास जगी है। मेरी उदासी दूर भगी है।
गई विषय - वासना सारी रे।। प्रभु के प्रेम में . . . . ।।

ज्ञान-ध्यान अब मन को भाए। सत्संग में मेरा मन जाए।
लगे साधु संगत प्यारी रे।। प्रभु के प्रेम में. . . . . ।।

सारा जग अपना सा लागे। पाप कर्म अब दूर हैं भागे।
मन निर्मल बना अविकारी रे।। प्रभु के प्रेम में . . . .।।

काम-क्रोध को बिसरा दीना। प्रभु भक्ति की बाजे बीणा।
राग बज रहा मनुहारी रे।। प्रभु के प्रेम में. . . . . ।।

ओम् प्रभु सृष्टि के स्वामी। घट - घट वासी अन्तर्यामी।
करूं उन से मिलन की तैयारी रे।। प्रभु के प्रेम में. ।।

# सुन्दर काण्ड

## ★ राम भक्त हनुमान ★

सब ने अपना बल बताया, पर चुप बैठे हनुमान।
पवन पुत्र क्यों मौन साधे, यह पूछ रहे जाम्बवान्।
तेज–गति, बल–बुद्धि में नहीं तुमसा कोई महान्।

# सुन्दर काण्ड

मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।
दशरथ नन्दन श्रीराम की पावन कथा सुनाते हैं।।

* * *

पवन पुत्र को अपनी शक्ति का हो आया अनुमान।
जोश–होश में खड़े हुए, लिया अपना सीना तान।
राम काज ही लक्ष्य मेरा, जब तक है तन में प्राण।
किया तन विशाल और ऊंचा भाल, हनुमंत हर्षाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।1।।

* * *

पवन सुत चले सागर के पार।।
राम काज को सफल बनाने, हो वायु पर सवार।।

* * *

सागर तट पर महेन्द्र गिरि पर चढे वीर हनुमान।
हर्षित होकर गर्जन करके, किया लंका प्रस्थान।
मैनाक वासी सोच रहे, करें हम हनुमंत सत्कार।।
पवन सुत चले सागर के पार।। . . . . . . ।।2।।

* * *

(समुद में मैनाक पर्वत पर वानर व नाग जातिं के लोग रहते थे और वे हनुमान का आदर–सत्कार करना चाहते थे। हनुमान ने मैनाकवासियों का धन्यवाद करते हुए कहा–)

* * *





। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

राम काज करके ही पाऊं बन्धुओ मैं विश्राम।
हाथ लगा मैनाक को किया हनुमंत ने प्रणाम।
तेज गति से आगे चल दिये करके सोच–विचार।।
पवन सुत चले सागर के पार।। . . . . . ।।3।।

* * *

(देवों ने हनुमान के बल–बुद्धि की परीक्षा हेतु नाग जाति की माता सुरसा को भेजा। सुरसा हनुमान का रास्ता रोक कर खड़ी हो गई। उसने हनुमान से कहा, मैं भुखी हुँ तुझे खाऊंगी। तब हनुमान ने कहा–)

* * *

सुरसा नाम सर्पों की माता बनी खड़ी अवरोध।
राम काज करके मैं माता बनु तुम्हारा भोज।
मुंह बाया सुरसा ने उससे दुगना किया विस्तार।।
पवन सुत चले सागर के पार।। . . . . . . ।।4।।

* * *

फिर छोटा से रूप बना हनुमंत मुंह में हो आए।
अब जाने दो माता मुझको हनुमंत विनय सुनाए।
बल–बुद्धि में सफल हुए, करो शीघ्र राम उपकार।।
पवन सुत चले सागर के पार।। . . . . . . ।।5।।

* * *

छायाग्राही एक राक्षसी रहती सागर के बीच।
छाया पकड़ कर सब जीवों को लेती थी वो खींच।
कपट समझं कर हनुमान ने तुरन्त दिया उसे मार।।
पवन सुत चले सागर के पार।। . . . . . . ।।6।।

लंका में जा पहुँचे हनुमंत चढ गए एक पहाड़।
परकोटे और खाईयों की थी बनी सुरक्षा बाड़।
लंका में घुसने की खातिर लघु रूप लिया धार।।
पवन सुत चले सागर के पार।। . . . . . . ।।7।।

* * *

पहरेदार लंकिनी ने फिर हनुमान को देखा।
ग्रास बने मेरा तू वानर मत दे मुझको धोखा।
घुंस्सा एक पड़ा हनुमंत का बही खून की धार।।
पवन सुत चले सागर के पार।। . . . . . . ।।8।।

* * *

ब्रह्मा का वरदान फला अब धन्य भाग्य हैं मेरे।
श्री राम के दूत पवन सुत दर्शन हो गए तेरे।
लंका में जाकर हे हनुमंत, करो सीता उद्धार।।
पवन सुत चले सागर के पार।। . . . . . . ।।9।।

* * *

एक-एक घर और एक-एक दर को देख रहे हनुमान।
महल-अटारी, वाटिका देखी, जहाँ हुआ अनुमान।
निद्रा में रावण को देखा, वो रहा श्वांस फुंकार।।
पवन सुत चले सागर के पार।। . . . . . . ।।10।।

* * *


। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

खोज–बीन में हनुमान ने नहीं सीता को देखा।
हो निराश महल पर चढ कर देखी एक वाटिका।
अशोक वाटिका में देखी वहाँ, दीन–हीन एक नार।।
पवन सुत चले सागर के पार।। . . . . . ।।11।।

* * *

लुकते –छिपते हनुमान तब अशोक वाटिका आए।
एक पेड़ पर छिप कर बैठे, लिया छोटा रूप बनाए।
पहरा दे रही राक्षसियां वहाँ, हाथ में ले तलवार।।
पवन सुत चले सागर के पार।। . . . . . . ।।12।।

* * *

थोड़ी देर में रावण आया, कहा सुनो तुम सीते।
पटरानी बन कर रहना तुम, दुःखों के दिन बीते।
कठोर वचन सुनकर सीता के, हुआ वध को तैयार।।
पवन सुत चले सागर के पार।। . . . . . . ।।13।।

* * *

दो मास की अवधी देकर चला गया लंकेश।
किसी तरह सीता को मनाओ कर गया से आदेश।
चारों तरफ खुंखार राक्षसी करती भय संचार।।
पवन सुत चले सागर के पार।। . . . . . . ।14।।

* * *

। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

सरमा नाम की एक राक्षसी बनी सीता की सहेली।
सत्य स्वप्न सुन लो मेरा तुम समझो न इसका पहेली।
एक वानर ने सोने की लंका दी अग्नि में बार।।
पवन सुत चले सागर के पार।। . . . . . . ।15।।

* * *

गधे सवार रावण को देखा, हुआ लंका का विनाश।
राजा बना विभीषण देखा, कर लो स्वप्न विश्वास।
सीता को मत तंग करो, करो सेवा और सत्कार।।
पवन सुत चले सागर के पार।। . . . . . . ।16।।

* * *

हाथ जोड़ सीता यूं बोली, सुनो तुम सरमा माई।
दुःख में साथी बनी हो मेरी, करती नित्य सहाई।
कब तक हे माता तुम मेरा करोगी यह उपकार।।
पवन सुत चले सागर के पार।। . . . . . . ।17।।

* * *

इस जीने से मरना अच्छा, कर दो कोई उपाय।
आर्य पुत्र के विरह में अब तो जीना नहीं सुहाय।
न जाने कब सुनेंगे भगवन्, मेरी करूण पुकार।।
पवन सुत चले सागर के पार।। . . . . . . ।18।।

* * *

धीरज धरो हे जनक दुलारी आयेंगे श्री राम।
अपने बल से रावण का वे करेंगे काम तमाम।
सीता को समझा कर सरमा, चली अपने घर–बार।।
पवन सुत चले सागर के पार।। . . . . . . ।।19।।

* * *

सरमा के जाने पर सोचे वहाँ अकेली सीता।
श्री राम बिन मेरा जीवन व्यर्थ यहाँ पर बीता।
न जाने कब आर्य पुत्र मेरा आके करें उद्धार।।
पवन सुत चले सागर के पार।। . . . . . . ।।20।।

* * *

## ★ सीता विरह गीत ★

कोई राम से आके मिला दो री,
विकल जिया तरस रहा।
कोई बिछुड़ा राम मिला दो री,
विकल जिया तरस रहा।।21।।

निर्बल हूँ मैं दूर किनारा,
काली घटायें आर न पारा।
कोई आ के राह बता दो री,
नयनों से पानी बरस रहा।।22।।

कभी तो थी चरणों की दासी,
आनन्द में नहीं फुली समाती।
कोई राम के दरस करा दो री,
मन दर्शन को तरस रहा।।23।।

* * *

राम जी तुम से पड़ा बिछोडा,
भाग्य ने मुझ को कहाँ पे छोड़ा।
कोई रूठा राम मना दो री,
नयनो से पानी बरस रहा।।24।।

* * *

दया का सागर नाम तिहारा,
राम मेरा जीवन आधारा।
कोई सिया से राम मिला दो री,
विकल जिया तरस रहा।।25।।

* * *

मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।
दशरथ नन्दन श्रीराम की पावन कथा सुनाते हैं।।

* * *

सोच समझ कर हनुमान ने तब दी मुद्रिका डार।
तारा टूटा हो ज्यों गगन से, यह सीता करे विचार।
शोक हरण हित अंगारा, दिया अशोक वृक्ष ने डार।
देखी मुद्रिका, श्री राम लिखा, नयन भर आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।26।।

अपने प्राण पिया की मुद्रिका ली सीता ने पहचान।
कैसे यह सम्भव हुआ, उसे अचरज हुआ महान्।
हर्ष–विषाद में जनक सुता तब हुई बड़ी परेशान।
सब हरे व्यथा, श्री राम कथा, हनुमान सुनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।27।।

चारों तरफ अब देखती, होकर जनकसुता हैरान।
कौन किधर से कर रहा, यह मधुर कथा गुणगान।
हे भाई तुम कौन हो और क्या है तेरी पहचान।
दिया वृक्ष छोड़ और हाथ जोड़, हनुमंत आ जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।28।।

शंका और भय ने किया फिर सीता को परेशान।
रूप बदल कर कोई राक्षस गा रहा गुणगान।
यह मुद्रिका मैं लाया देवी श्री राम दूत हनुमान।
श्री राम कथा, मैं रहा सुना, सब शंका मिटाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।29।।

जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

(तब सीता जी हनुमान से पूछती है–)

राम–लखन वानर वीरों का कैसे हुआ यह मेल।
कथा सुनाई हनुमंत ने और कहा भाग्य का खेल।
जनक सुता पुलकित हुई, रही नयन नीर उडेल।
हे प्राण नाथ, कब होगा साथ, कब पास बुलाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।30।।

(अब हनुमान सीता जी को राम–लक्ष्मण की कुशलता का समाचार सुनाते हैं।)

भ्राता लक्ष्मण के सहित हैं कुशल पूर्वक श्री राम।
विरह वेदना में वे हरदम रहते हैं उपराम।
धैर्य धारण करके देवी तुम सुनो राम पैगाम।
करें सागर पार, रावण को मार, सब कष्ट मिटाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।31।।

(हनुमान का छोटा रूप देख कर सीता जी पूछती हैं–)
तुम वानर छोटे – छोटे और राक्षस बड़े बलवान।
कैसे जीत पाओगे लंका, अब कहो वीर हनुमान।
पवन पुत्र ने प्रकट किया तब अपना रूप महान्।
किया तन विशाल, ज्यों महाकाल, हनुमान दिखाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।32।।

अति प्रसन्न सीता हुई, लख विराट रूप हनुमंत।
बड़े–बड़े वानर हैं देवी, मुझ से भी भीम–बलवन्त।
राम–लखन के बाणों से अब होगा रावण का अन्त।
रावण शक्ति, अभी नहीं परखी, हनुमान ये सोचते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।33।।

भूख लगी है मुझ को देवी, ये कहते वीर हनुमान।
मीठे–रसीले फल खाकर मैं और करूं जल पान।
भूख–प्यास मिटाकर देवी, मैं करूं वापिस प्रस्थान।
कहे जनक दुलारी, पहरा भारी, यहाँ राक्षस होते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।34।।

पहरेदारों का देवी मुझको बिल्कुल नहीं है भय।
आज्ञा मिले जो आपकी तो मैं बन जाऊंगा अभय।
आदर सहित हनुमान ने की ये जनकसुता से विनय।
आज्ञा पाई, नहीं देर लगाई, बगिया में आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।35।।

शरीर विशाल किया हनुमंत और लगे तोड़ने फल।
कुछ खाये कुछ तोड़ दिये, की बगिया में हलचल।
पहरेदार रोकने आये, उन्हें किया हनुमंत ने विकल।
कुछ मार दिये,कुछ घायल किये, कुछ भाग के जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।36।।

| जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम |

मारपीट कर रखवालों को दिया हनुमंत ने भगा।
जान बचा कर भागे राक्षस तब रावण को पता लगा।
एक बड़ा वानर आया, रहा बाग में उधम मचा।
बड़ा क्रोध किया, आदेश दिया, अक्षय को पठाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।37।।

राक्षसों सहित अक्षय आया, किया हनुमान पर वार।
वृक्ष उखाड़ हनुमान ने किया अक्षय पर प्रहार।
रथ तोड़ा और सिर फोड़ा, गया अक्षय स्वर्ग सिधार।
हनुमंत गर्जे, राक्षस भागे, दरबार में आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।38।।

पुत्र अक्षय का वध सुन कर हुआ रावण हैरान।
वानर कौन आया है ऐसा जो है इतना बलवान।
इन्द्रजित् का तब रावण ने किया युद्ध अभियान।
चौक बन्दी करो, उसे बन्दी करो, हम देखना चाहते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।39।।

इन्द्रजित् चढ़कर आया, होकर रथ पर सवार।
पीछे–पीछे राक्षस सेना कर रही थी जय–जयकार।
हुआ भयंकर युद्ध हनुमंत ने राक्षस दीन्हे मार।
फिर रथ तोड़ा, घायल थोड़ा, इन्द्रजित् हो जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।40।।

इन्द्रजित् को घुंस्सा मार हुए हनुमंत वृक्ष सवार।
ब्रह्मास्त्र का हनुमान पर करते इन्द्रजित् प्रहार।
रखने मान ब्रह्मा जी का तब हनुमंत हुए लाचार।
मुर्छा आई, कुछ पल छाई, हनुमंत गिर जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।41।।

हनुमान को बान्ध चले फिर रावण के दरबार।
दोनों ओर राहों पे खड़े, सब देख रहे नर–नार।
बड़ा विकट वानर आया है, कई राक्षस दीन्हें मार।
अब सजा मिले, बड़ा मजा मिले, राक्षस हर्षाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।42।।

रावण के दरबार में जब पहुँचे वीर हनुमान।
क्रोधित रावण ने कहा, तुम कौन वानर नादान।
किस कारण से बाग उजाड़ा, किया जानी नुकसान।
सुनो हे वानर, नहीं मौत का डर, रावण धमकाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।43।।

भूख लगी थी मुझको रावण, फल खाये दो–चार।
राक्षस कई मारने आये, तब मैने किया प्रहार।
रामदूत हनुमान हूँ मैं, अब सुन लो मेरा विचार।
चलो राम शरण, नहीं होगा मरण, तुमको समझाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।44।।

क्रोधित रावण ने हनुमंत के वध की सजा सुनाई।
कहा विभीषण ने नीति में है दूत के वध की मनाही।
अंग-भंग की इसको राजन् उचित सजा दो सुनाई।।
वानर का मर्म, लांगुल है धर्म, इसे आग लगाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।45।।

रावण के आदेश से हनुमंत को लंका में था घुमाया।
रूई-तेल लगा लांगुल पर, फिर अग्नि से जलाया।
बन्धन सारे तोड़ हनुमंत ने शरीर विशाल बनाया।
चढ़ा महल अटारी,सब आग में बारी,लंका को जलाते है।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।46।।

आग बुझाकर हनुमान फिर तत्काल वाटिका आए।
सारी राक्षसियां भाग गई, रही डर से रूदन मचाए।
स्वप्न सरमा का सच हुआ, यह सोच सिया हर्षाए।
जय श्री राम, जय श्री राम, हनुमान गुञ्जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।47।।

अनुमति लेने आया देवी, मत करो सोच-विचार।
राम-लखन संग वानर सेना करेगी सागर पार।
पापी रावण को मार तुम्हारा श्री राम करें उद्धार।
सन्देश कहो, एक चिन्ह भी दो, अब वापिस जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।48।।


। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

जनक सुता ने हनुमान को दी चूड़ामणि उतार।
श्री राम के चरणों में दिया विनय सन्देश अपार।
मुझ अभागी का हे राघव! तुम शीघ्र करो उद्धार।
चले वीर हनुमान, वायु के समान, उस पार वो आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।49।।

हर्षित ध्वनि दूर से दी हनुमंत ने सब को सुनाये।
आनन्द में भर वनवासी रहे उछल-कूद मचाये।
हनुमान को सभी प्रेम से रहे अपने गले लगाये।
सीता दर्शन, लंका का दहन, सब हाल सुनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।50।।

सुनकर हर्षित हो गए, दुःख-दर्द गए सब भूल।
मधुवन में सब आ गए, रहे मिटा भूख का शूल।
जी भर मधु-फल खाये और तोड़े कई वृक्ष समूल।
रक्षक पीटे, भागे वो रोते, किष्किन्धा में आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।51।।

गिरते-पड़ते घायल रक्षक पहुँचे सुग्रीव के पास।
अंगद के दल ने किया, मधुवन में भारी विनाश।
सुनकर हर्षित हो गए और हुआ पूर्ण विश्वास।
सिद्ध काज किया, यही राज हुआ, आनन्द मनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।52।।

थोड़े समय में वानर दल भी गया किष्किन्धा आए।
बड़े प्रेम से सुग्रीव ने लिया सब को गले लगाए।
जाम्बवान् ने समाचार सब सुग्रीव को दिया सुनाए।
किया कर्म महान्, हे वीर हनुमान, सब काज बनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।53।।

श्री राम के काज संवारे सब पवन पुत्र हनुमान।
गले लगा सुग्रीव ने किया हनुमंत का मान–सम्मान।
खोजी दल के साथ किया सुग्रीव ने तुरन्त प्रस्थान।
चले हो प्रसन्न, करें राम दर्शन, सब कथा सुनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।54।।

ऋष्यमुक पर पहुँच सभी ने की हाथ जोड़ प्रणाम।
आलिगंन कर राम ने पूछा सब से हाल तमाम।
ईश कृपा से हनुमान ने सिद्ध किया सब काम।
तुम हो महान्, हे वीर हनुमान, राम गले लगाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।55।।

पास बिठा कर हनुमान से बोले श्री राम सुजान।
अपनी विजय का पूरा वर्णन करो वीर हनुमान।
सीता खोज से लंका दहन तक कर दिया पूरा बखान।
सीता की दशा, फिर रहे बता, दुःख से भर जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।56।।

विरह वेदना जनक सुता की कहने लगे हनुमान।
घोर कष्ट सहकर भी सिया ने रखा धर्म महान्।
राम चरण में हरदम देवी रखती लगाए ध्यान।
फिर चूड़ामणि, थी प्रेम सनी, श्री राम को देते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द की गाथा हम गाते हैं।।57।।

चूड़ामणि को देख राम हुए प्रेम से आत्म विभोर।
जलधारा नयनों से निकली और दुःखी हुआ मनमोर।
हनुमान के उपकारों का अब मुल्य नहीं कोई ओर।
लिया गले लगा, हृदय में बसा, उसे पास बिठाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द की गाथा हम गाते हैं।।58।।

वानरराज सुग्रीव ने किया श्रीराम से सोच-विचार।
वनवासी सेना राजन् करो अब चलने को तैयार।
खोजी दल आगे चले और रहें सावधान होशियार।
आदेश दिया, निर्देश दिया, सब जोश में आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द की गाथा हम गाते हैं।।59।।

वानर सेना चल पड़ी, बड़े टिड्डी दल के समान।
वन, पर्वत, नदियों को लांघते वानर वीर महान्।
वन प्राणी सब भाग रहे और धूल उड़ी आसमान।
चले वानर वीर, ज्यों राम तीर, तट सागर आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द की गाथा हम गाते हैं।।60।।

( सुन्दर काण्ड समाप्त )

जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।
लंका
काण्ड

## ★ सेतु बन्ध ★

पाँच दिवस में सेतु बना,
हुए देव-गन्धर्व हैरान।
उछल-कूद वानर वीरों ने
किया लंका को प्रस्थान।
राम -लखन के संग चले,
सुग्रीव, अंगद, हनुमान।

# लंका काण्ड

मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।
दशरथ नन्दन श्रीराम की पावन कथा सुनाते हैं।।

सागर तट पर वनवासी सेना ने शिविर लगाया।
सेनापतियों ने विचरण कर रक्षा में ध्यान लगाया।
योजन कई वानर फैले नहीं आर–पार कुछ पाया।
लड़ने को तैयार, जा सागर पार, बाजू फड़काते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।1।।

(एक दिन सांय काल श्रीराम, लक्ष्मण व सुग्रीव के साथ सागर तट पर खड़े सागर को पार करने पर विचार कर रहे थे।)

अनन्त सागर को देख कर श्री राम रहे अकुलाये।
सागर किस विधि पार हो, हे लक्ष्मण नहीं उपाय।
दुष्ट रावण को मार कर सिया रक्षा कैसे की जाए।
हुआ सन्ध्या समय, की प्रभु विनय, वही राह दिखवाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।2।।


। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

उधर लंकापति कर रहा सचिवों से सोच–विचार।
एक वानर हनुमान ने दी सोने की लंका बार।
वनवासी सेना भी आ गई अब सागर के उस पार।
क्या वनवासी, अयोध्या वासी, हम मार भगाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।3।।

बोले विभीषण रावण से, सुनो राजन् कर ध्यान।
भ्रमित कर रहे आपको, नहीं इन्हें कोई अनुमान।
जनक सुता वापिस करने से ही बचे आपकी शान।
होगा विनाश, लंका का नाश, हम तुम्हें समझाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।4।।

बार –बार विभीषण ने किया रावण से अनुरोध।
सीता को लौटा कर ही तुम हरो राम का क्रोध।
सामर्थ्य नहीं है किसी में जो करे श्री राम प्रतिरोध।
प्रलय के समान, हैं उनके बाण, जब वे बरसाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।5।।

कुल कलंक कायर बता, किया विभीषण का अपमान।
कटु वचन सुनकर रावण के विभीषण हुआ परेशान।
अपमानित होकर विभीषण ने, किया तुरन्त प्रस्थान।
लंका से गमन, श्री राम शरण, तब विभीषण जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।6।।

(विभीषण अपने चार साथियों सहित सागर पार करके श्रीराम की शरण में आ गया। श्रीराम ने उसे अपना मित्र बना कर लंकापति के रूप में उसका अभिषेक कर दिया।)

अभिषेक कर विभीषण का दिया लंकापति बनाए।
सागर किस विधि पार हो, यह चिन्ता रही सताए।
कहा विभीषण ने सेतु बन्ध ही केवल एक उपाय।
अनुष्ठान करो, आह्वान करो, विभीषण समझाते हैं।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।7।।

तीन दिवस फिर राम ने किया सागर अनुष्ठान।
वरूण देव प्रकट हुए, किया सागर का समाधान।
विश्वकर्मा सुत नल शिल्पी है अपने पिता के समान।
लगे वानर वीर, बन्धा सागर नीर, नल सेतु बनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।8।।

पाँच दिवस में सेतु बना, हुए देव-गन्धर्व हैरान।
उछल-कूद वानर वीरों ने किया लंका को प्रस्थान।
राम -लखन के संग चले, सुग्रीव, अंगद, हनुमान।
किया सागर पार, लड़ने को तैयार, हुंकार लगाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।9।।

रावण के दो गुप्तचर गए वानर सेना में आए।
विभीषण ने पहचान कर, दिया उनको पकड़ाए।
दया राम ने कर दोनों पर, दिया लंका भिजवाए।
रावण कपटी, एक माया रची, सीता भरमाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।10।।

(रावण ने माया से रचे राम – लक्ष्मण के कटे हुए सिर थाली में रख कर सीता को दिखाए। उन्हें देखकर सीता रोने लगी। तब सरमा ने उसे समझाया कि अभी तो युद्ध प्रारम्भ ही नहीं हुआ। यह सब तो रावण की माया है।)

सरमा नाम की राक्षसी रही सीता को समझाए।
माया का यह खेल है सारा, मत इसमें भरमाए।
राम–लखन सब जीवित हैं, यह मन को लो समझाए।
हुई एक सभा, रावण था खफा, माल्यवान् समझाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।11।।

युद्ध से पहले राम ने भेजा अंगद को दूत बनाए।
रावण सभा में अंगद ने दिया राम सन्देश सुनाए।
सबक सिखाने रावण को, दिया उसने हड़कंप मचाए।
गया निकल वीर, ज्यों चले तीर, वापिस आ जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।12।।

लंका को घिरी देख रावण ने किया सेना को तैयार।
शिला और वृक्षों को उठा हुए वानर वीर होशियार।
युद्ध भयंकर होने लगा, चले भाले, तीर, तलवार।
कुछ मारे गए, कुछ घायल हुए, घमासान मचाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।13।।

सांय काल से पूर्व रावण के दिये कई योद्धा मार।
वानर वीरों ने राक्षसों का किया बहुत बड़ा संहार।
कपट युद्ध में इन्द्रजित् ने तब किया भयंकर वार।
हुआ अन्तर्धान, किया शर–सन्धान, आघात पहुँचाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।14।।

नागपाश के विष बन्धन में बन्धे राम–लखन से वीर।
दोनों को आहत किया, रहा फेंक अदृश्य हो तीर।
भूमि पर दोनों पड़े, हुए वनवासी वीर अधीर।
गरूड़ देव आए और बन्ध हटाए, सब होश में आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।15।।

वनिता पुत्र गरूड़ ने फेरा राम–लखन पर हाथ।
तुरन्त घाव सब भर गए और स्वस्थ हुए एक साथ।
गले लगा गरूड़ देव को किया राम ने धन्यवाद।
सुग्रीव हर्षे और वानर गरजे, राक्षस घबराते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।16।।

वानर गर्जना सुनकर रावण हुआ अति हैरान।
राम–लखन को स्वस्थ जानकर हुआ बड़ा परेशान।
क्रोधित रावण ने दिया धुम्राक्ष को यह फरमान।
घोर युद्ध करो, राम वध करो, रणभूमि पठाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।17।।

(इस युद्ध में रावण के पांच सेनापति, धुम्राक्ष, वज्रदृष्ट, अकम्पन, व प्रहस्त आदि के मरने के बाद रावण स्वयं युद्ध करने आया।)

रावण का फिर हनुमान से हुआ भयंकर युद्ध।
हनुमंत का घुंस्सा लगा और हुआ रावण बेसुध।
लक्ष्मण के तीखे बाणों से, हुआ रावण अति क्रुद्ध।
किया शक्ति वार, शिव का हथियार,लक्ष्मण पे चलाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।18।।

घायल लक्ष्मण को रावण ने चाहा तुरन्त उठाना।
भारी घुंस्से से हनुमंत के रावण का होश भुलाना।
उठा बाहों में लक्ष्मण को फिर राम के पास पहुंचाना।
रावण सम्भला और बाण चला, संग्राम मचाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।19।।

लक्ष्मण से शक्ति हटा किया राम ने रावण पर वार।
रथ, ध्वजा, छत्र तोड़े और दिया सारथी मार।
धनुष–बाण दिया काट राम ने, हुआ रावण लाचार।
हुआ मुकुट हीन और श्री हीन, रावण घबराते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द की गाथा हम गाते हैं।।20।।

* * *

(राम से युद्ध में परास्त होकर रावण लंका लौट गया और कुम्भकर्ण को उठाने के आदेश दे दिये।)

* * *

रावण के आदेश से चले कुम्भकर्ण को जगाने।
मदिरा, मास और खाद्य सामग्री, उसको भेंट चढ़ाने।
ढोल–ढमाके व रणभेरी से लगे कोलाहल मचाने।
राक्षस जागा, खावन लागा, फिर मदपान कराते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द की गाथा हम गाते हैं।।21।।

* * *

कुम्भकर्ण से युपाक्ष ने कहा युद्ध का सारा हाल।
प्रमुख सेनापति मारे गए, अब युद्ध बना महाकाल।
मिलने रावण से चल पड़ा वह कुम्भकर्ण विकराल।
फिर रण को चला, ज्यों पहाड़ हिला, वानर घबराते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द की गाथा हम गाते हैं।।22।।

पूछा राम ने विभीषण से यह कौन आया महावीर।
रावणानुज मेरा अग्रज यह कुम्भकर्ण अतिवीर।
महाभयंकर नाद से डर कर भागे वनवासी वीर।
सब भाग चले, कुछ पांवों तले, फिर कुचले जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।23।।

* * *

अंगद और नल-नील ने वानर वीरों को रोका।
वृक्षों और शिलाओं को था बाहों में उठा कर फेंका।
टकराकर सब टूट गई, ज्यों बिखरा हवा का झोंका।
था महाबली, ज्यों मौत चली, वानर डर जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।24।।

* * *

(कुम्भकर्ण को रोकने के लिए सुग्रीव ने एक शिला उठाकर उसकी छाती पर फैंकी, जो उसकी छाती से टकराकर, टूटकर बिखर गई।)

* * *

फिर कुम्भकर्ण ने शिला उठा, दी सुग्रीव पर फेंक।
आहत होकर गिरा धरा पर, हुआ सुग्रीव अचेत।
उठा सुग्रीव को चल पड़ा, सब वीर रहे थे देख।
हनुमंत सोचें, कैसे रोकें, कुछ समझ न पाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।25।।

लंका की गलियों में जाकर सुग्रीव को आया होश।
तुरन्त सोच कर उसने दिखाया कुम्भकर्ण को जोश।
नाक–कान दिये फाड़ असुर के और दिखाया रोश।
राक्षस से छुड़ा, वानरराज मुड़ा, वापिस आ जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।26।।

क्रोधित होकर कुम्भकर्ण वापिस रणभूमि आया।
खाता, कुचलता वानर सेना को इधर–उधर दौड़ाया।
लक्ष्मण के तीखे बाणों से नहीं कुम्भकर्ण भरमाया।
हे लखन वीर, तुम धरो धीर, युद्ध राम से चाहते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।27।।

भारी शिला उठा राक्षस ने तब रामचन्द्र पर फेंकी।
अपने बाणों से राघव ने थी आती शिला वह रोकी।
क्रुद्ध होकर कुम्भकर्ण ने तब गदा राम पर फेंकी।
दी काट गदा, तब मुगदर उठा, बड़ा रोश दिखाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।28।।

वायव्य अस्त्र से राम ने दिया उसका बाजु काट।
दूजे से जब वृक्ष उखाड़ा, दिया एन्द्रास्त्र से काट।
अर्धचन्द्र से टांगें काटी, दिया एन्द्र से सिर काट।
भूमि पे गिरा, ज्यों पहाड़ गिरा, वानर हर्षाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।29।।

समाचार सुन कुम्भकर्ण का हुआ रावण बेहोश।
भारी विलाप करने लगा, उसे जब भी आया होश।
अतिकाय, त्रिशिरा योद्धा उसे लगे दिलाने जोश।
हाथी-घोड़े चढे, छः योद्धा बढे, हुंकार लगाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।30।।

राक्षस योद्धा रावण के सब गये युद्ध में मारे।
शोक सागर में डूबा रावण सोचे अब कौन उभारे।
इन्द्रजित् ने तब रावण से थे अपने वचन उच्चारे।
मैं युद्ध करूं और विजय वरूं, क्यों शोक मनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।31।।

रथ पर चढ़कर इन्द्रजित् तब रणभूमि में आया।
भयंकर बाण वर्षा से उसने भारी कोहराम मचाया।
गायब होकर कपट युद्ध से सबको आघात पहुंचाया।
हुए चेत हीन, बने वानर दीन, सब रूदन मचाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।32।।

सबको अचेत कर इन्द्रजित् गया लंका में लौट।
राम - लखन बेहोश थे, उन्हें आई भयंकर चोट।
सुग्रीव, अंगद, जाम्बवान् भी थे रहे जमीं पर लोट।
सुनो हनुमान, संकट निदान, जाम्बवान् समझाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।33।।

| जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम |

| जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम |

हिम क्षेत्र में ऋषभ पर्वत पर, हैं औषधियां चार।
दिव्य औषधी देवों ने वहाँ रखी हैं सोच–विचार।
शीघ्र गमन कर औषधी लाओ, करो सब का उपचार।
चले हनुमान, वायु के समान, हिम शिखा पे आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।34।।

औषधियां अदृश्य हुई, करते हनुमान यह विचार।
कौन – कौन सी औषधी और किससे हो उपचार।
शिला खण्ड को उठा लिया तब करके तुरन्त विचार।
वापिस आये, देख हर्षाये, सब होश में आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।35।।

(सुग्रीव के आदेश से वानर वीरों ने मशालें लेकर रात्रि में लंका नगरी में आग लगा दी और बहुत से राक्षसों को पीट–पीट कर मार दिया। तब क्रोधित रावण ने इन्द्रजित् को युद्ध करने का आदेश दिया।)

रावण के आदेश से चला इन्द्रजित् युद्ध मचाने।
नकली सीता वध किया राम–लक्ष्मण को भरमाने।
अदृश्य हो दिव्यास्त्रों से वह सब को लगा गिराने।
आघात किया फिर गायब हुआ, कुछ समझ न पाते हैं।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।36।।

विभीषण के आह्वान पर, किया निकुम्बिला अभियान।
लक्ष्मण के संग नील, नल और अगंद वीर हनुमान।
वानर वीरों ने राक्षसों का किया बहुत बड़ा नुकसान।
यज्ञ नष्ट हुआ, सब भ्रष्ट हुआ, इन्दजित् उठ जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।37।।

क्रोधित होकर इन्दजित् ने तब युद्ध करने की ठानी।
हुआ भयंकर युद्ध लखन से, नहीं दोनों का कोई सानी।
दिव्य अस्त्रों को चला रहे थे, दोनों वीर युद्ध विज्ञानी।
संग्राम हुआ, घमासान हुआ, घायल हो जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।38।।

कहा लखन से विभीषण ने, करो ब्रह्मास्त्र प्रहार।
गृह भेदी कह इन्दजित् ने किया शक्ति का वार।
इन्दजित् की शक्ति को किया लक्ष्मण ने बेकार।
ब्रह्मास्त्र चला, ज्यों काल चला, सिर काट गिराते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।39।।

वनवासी वीरों ने किया तब भारी हर्ष उल्लास।
इन्दजित् को मार युद्ध में, आये लखन राम के पास।
गले लगा कर राम ने दिया स्नेह भरा विश्वास।
उपचार किया, सत्कार किया, सब जोश में आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।40।।

(अपने वीर पुत्र इन्द्रजित् के वध का समाचार सुन कर रावण अत्यन्त दुःखी हुआ और क्रोध में भर कर महोदर, महापाश्व आदि सेनापतियों को लेकर युद्ध के लिए चल पड़ा। सेनापतियों के मरने पर रावण स्वयं युद्ध करने लगा।)

* * *

## ★ गीत ★

चला रावण श्रीराम संग से युद्ध करने।
अपने पापी जीवन का अब अन्त करने।।
चारों वेदों का पंडित कहलाया।
लेकिन कर्मों से पाप ही कमाया।
अपने दुष्कर्मों का आज दण्ड भरने।।
भाई – बन्धु गंवा दिये सारे।
बड़े बलशाली योद्धा से न्यारे।
राक्षस बुद्धि का चला अहंकार करने।।
सारी लंका में रूदन मचा था।
किसी – किसी का लाल बचा था।
लगी लंका में अश्रु की धार बहने।।
छल – कपट व माया का दिवाना।
चला बनने वो मौत का परवाना।
आज हाथों रघुवर के मौत वरने।।

* * *

राम रावण के बीच में तब हुआ भयंकर युद्ध।
दिव्य अस्त्र संचालन में थे राम-रावण प्रबुद्ध।
राम ने आग्ने अस्त्र चलाया, आसुर अस्त्र के विरूध।
करें घात-प्रतिघात, नहीं कोई मात,इस युद्ध में होते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।41।।

* * *

दिव्यास्त्रों को विफल देख, रावण हुआ क्रुद्ध अपार।
आसुरास्त्र से कठोर शूल व निकले गदा बेशुमार।
राम ने गन्धर्वास्त्र से किये रावण के अस्त्र बेकार।
लगे राम तीर और रावण तीर, आहत हो जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।42।।

* * *

वीर लखन ने ध्वजा काट और दिया सारथी मार।
गदा मार कर विभीषण ने किया घोड़ों पर प्रहार।
क्रुद्ध रावण ने विभीषण पर किया तब शक्ति का वार।
शक्ति का वार, लक्ष्मण बेकार, बाणों से कराते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।43।।

पुनः शक्ति का विभीषण पर करते रावण प्रहार।
रावण शक्ति को लक्ष्मण ने कर दिया फिर बेकार।
तब लक्ष्मण को लक्ष्य बना किया वज्र शक्ति प्रहार।
शक्ति जो चली, लक्ष्मण को लगी, मूर्च्छित हो जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।44।।

व्यथित राम ने शक्ति को लक्ष्मण से दूर हटाया।
वीर वानरों को लक्ष्मण के था चारों ओर बिठाया।
तीखे बाणों से रावण का फिर सारा गर्व मिटाया।
रावण भागा, रण को त्यागा, तब पीठ दिखाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।45।।

लक्ष्मण को मूर्च्छित देख राम ने किया करूण विलाप।
कहा सुषेण ने राम से क्यों करते हैं शोक– संताप।
वीर लखन अभी जीवित है, युं रूदन करें न आप।
सुनो वीर हनुमान, संकट निदान, तुम से ही होते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।46।।

शीघ्र हिमालय पर जाकर औषधी चार ले आओ।
मृत संजीवनी, शल्यकरणी, सवर्णकरणी को पाओ।
चौथी औषधी संधानकरणी को हनुमंत शीघ्र ले आओ।
हनुमान जति, बड़ी तेज गति, सब औषधी लाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।47।।




। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

पुनः शक्ति का विभीषण पर करते रावण प्रहार।
रावण शक्ति को लक्ष्मण ने कर दिया फिर बेकार।
तब लक्ष्मण को लक्ष्य बना किया वज्र शक्ति प्रहार।
शक्ति जो चली, लक्ष्मण को लगी, मूर्च्छित हो जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।44।।

व्यथित राम ने शक्ति को लक्ष्मण से दूर हटाया।
वीर वानरों को लक्ष्मण के था चारों ओर बिठाया।
तीखे बाणों से रावण का फिर सारा गर्व मिटाया।
रावण भागा, रण को त्यागा, तब पीठ दिखाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।45।।

लक्ष्मण को मूर्च्छित देख राम ने किया करुण विलाप।
कहा सुषेण ने राम से क्यों करते हैं शोक– संताप।
वीर लखन अभी जीवित है, युं रूदन करें न आप।
सुनो वीर हनुमान, संकट निदान, तुम से ही होते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।46।।

शीघ्र हिमालय पर जाकर औषधी चार ले आओ।
मृत संजीवनी, शल्यकरणी, सवर्णकरणी को पाओ।
चौथी औषधी संधानकरणी को हनुमंत शीघ्र ले आओ।
हनुमान जति, बड़ी तेज गति, सब औषधी लाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।47।।

रगड़-पीस कर औषधियों का, रस लिया निकाल।
मूर्च्छित लक्ष्मण की नाक में, वह दिव्य रस दिया डाल।
औषधी रस को सूंघ कर, हुए लक्ष्मण खड़े तत्काल।
हनुमान वीर और सुषेण धीर के गुण सब गाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।48।।

गले लगाकर लखन को, किया राम ने प्यार-दुलार।
कहा लखन ने राम से, भैया तुरन्त करो प्रतिकार।
दुष्ट रावण को मारकर, करो जनक सुता उद्धार।
मन वचन धार, हुए राम तैयार, धनु-बाण उठाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।49।।

तभी दिव्य रथ इन्द्र ने दिया राम के लिए भिजवाए।
इन्द्र सारथी मातलि ने कहा राम से सीस नवाए।
दिव्य रथ व धनुष-बाण दिये देवराज भिजवाए।
लिया कवच धार, रथ पे सवार, राघव हो जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।50।।

राम-रावण में होने लगा तब अद्‌भुत घोर संग्राम।
देव, गन्धर्व व ऋषिगण आये, सब देखन को संग्राम।
रावण के राक्षसास्त्र पर गरूड़ास्त्र चलाते श्री राम।
हो क्रुद्ध उठा, भारी शूल उठा, राघव पे चलाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।51।।

शूल भयंकर आ रहा, श्री राम रहे उसे देख।
इन्द्रदेव की शक्ति को दिया तुरन्त शूल पर फेंक।
भारी शूल तब नष्ट हुआ और टुकड़े हुए अनेक।
चले राम तीर, रावण शरीर, आहत कर जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।52।।

राम बाणों से घायल होकर, रावण हुआ अचेत।
रक्षा में रावण की उसका सारथी हुआ सचेत।
रणभूमि से बाहर रथ को ले गया दिलाने चेत।
जब होश आया, आपा खोया, कटु वचन सुनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।53।।

रणभूमि में चलने का दिया रावण ने आदेश।
तुरन्त सारथी चल पड़ा, किया रणभूमि प्रवेश।
तभी अचानक होने लगे, अशुभ दर्शन सन्देश।
घन-घन हर्षा, हुई रूधिर वर्षा, घोड़े आंसू बहाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।54।।

उधर राम के पक्ष में लगे होने शुभ संकेत।
सौम्य, सुखद और जय कारक लक्षण हुए सचेत।
हर्षित राम ने समझ लिया रावण मृत्यु संकेत।
हुआ रण महान्, मुश्किल में जान, रावण घबराते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।55।।

राम ने तीखे बाणों से रावण ध्वज काट गिराया।
इन्द्र सारथी ने घोड़ों को बड़ी फुर्ती से चलाया।
हुआ भयंकर युद्ध दोनों में, अन्धकार सा छाया।
हुए राम क्रुद्ध, किया विकट युद्ध, दिव्य बाण चलाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।56।।

श्री राम ने सर्प समान एक बाण धनुष पे चढाया।
रावण का सिर काट बाण पुनः तरकश में आया।
बार–बार सिर कट रहे, अचरज महान् हो आया।
सारथी बोले, यह राज खोले, रावण माया दिखाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।57।।

बार–बार इन अस्त्रों का क्यों राघव करते प्रयोग।
अब तो केवल ब्रह्मास्त्र का श्री राम करो उपयोग।
रावण के अब मृत्यु काल का बन आया है योग।
ब्रह्मास्त्र उठा, लिया धनुष चढा, श्री राम चलाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।58।।

अभिमन्त्रित ब्रह्मास्त्र दिया श्री राम ने तुरन्त चला।
तेज गति से वह दिव्य अस्त्र रावण की ओर चला।
हृदय फाड़ धरती में घुसा, फिर तरकश आन मिला।
हुआ प्राण हीन, ज्यों तड़पे मीन, भू पर गिर जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।59।।

। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

रावण को मरा देख राक्षस, गए सब लंका भाग।
देव–गन्धर्व हर्षित हुए और अप्सरा गाएं राग।
पुष्प वर्षा होने लगी और जले खुशी के चिराग।
वानर हर्षे, ज्यों घन गर्जे, सब खुशी मनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।60।।

मृत रावण को देख कर हुआ विभीषण को संताप।
मंदोदरी संग सब रानियां आई करती करूण विलाप।
नाथ हमें क्यों छोड़ कर, अब चले गए हैं आप।
हरि परनारी, नहीं बात विचारी, परलोक में जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।61।

आदेश मान श्री राम का, तब हुए विभीषण तैयार।
आदर सहित भ्राता रावण का किया अन्तिम संस्कार।
इन्द्र सारथी मातलि का किया राम ने आदर–सत्कार।
सम्मान मिला, देव लोक चला, दिव्य रथ उड़ाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।62।।

(रावण के अन्तिम संस्कार और इन्द्र सारथी मातलि को बिदा करने के पश्चात् राम के आदेश से लक्ष्मण ने लंका में जाकर विधिवत लंकापति के रूप में विभीषण का राज्याभिषेक किया और तदुपरान्त–)

। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

पास खड़े हनुमान से तब कहने लगे श्री राम।
जनक सुता से जाकर लंका में दे दो यह पैगाम।
दुष्ट रावण को मार कर पहुँचाया यम के धाम।
सब हाल कहो, तत्काल कहो, हनुमंत वहाँ जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।63।।

अशोक वाटिका जा हनुमंत ने किया विनम्र प्रणाम।
रावण वध और राम–लक्ष्मण का कुशल–क्षेम तमाम।
सुन कर हर्षित हो गई और भूली व्यथा तमाम।
अब राम दर्शन और पुनर्मिलन, प्रभु कब करवाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।64।।

श्री राम ने विभीषण से फिर अपने वचन सुनाये।
स्नान, वस्त्र, आभुषण अलंकृत कर, सीता को लायें।
आदेश मान विभीषण ने सब कार्य अनुकूल करवाये।
पालकी सवार, हर्षित अपार, सीता को लाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।65।।

कहा राम ने सीता से अब सुन लो जनक दुलारी।
दुष्ट रावण को मार हुई प्रतीज्ञा सफल हमारी।
पर घर में रहने वाली तुम रही भाग्य की मारी।
अब चाहो जहाँ, तुम जाओ वहाँ, आदेश सुनाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।66।।

सुनकर वचन श्री राम के, हुई सीता बहुत दुःखी।
कठोर वचन सुन पति के लज्जा से बहुत झुकी।
आंख में आंसू भर लक्ष्मण से अपनी बात कही।
करो चिता तैयार, मृत्यु के द्वार, हम जाना चाहते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।67।।

दुःखित मन से लक्ष्मण ने की काष्ट चिता तैयार।
कर–बद्ध देव ब्राह्मणों को किया सीता ने नमस्कार।
पतिव्रता की अग्निदेव तुम सुनना सत्य पुकार।
किया अग्नि प्रवेश, था कर्म विशेष, देवगण आ जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।68।।

गोद में ले कर अग्निदेव बाहर सीता को ले आये।
शुद्ध, पवित्र जनक सुता की साक्षी बन अग्नि आये।
सुनो राघव सीता पर कभी नहीं पड़े पाप के साये।
स्वीकार करो, अंगीकार करो, देवगण समझाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।69।।

कहा राम ने जनक सुता नहीं मुझ से कभी जुदा।
अग्नि परीक्षा बिन इसका कभी दाग न जाता धुला।
लोक अग्नि की साक्षी ने दिया इसको पवित बना।
स्वीकार किया, अंगीकार किया, हृदय में बसाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।70।।

कहा राम ने विभीषण से सुनो लंका पति सुजान।
अल्प समय में चाहते हैं हम अयोध्या को प्रस्थान।
भाई भरत के कष्टों का अब हो आया हमें ध्यान।
न विलम्ब करो, हमें बिदा करो, हम जाना चाहते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।71।।

हाथ जोड़ विभीषण ने कहा, विनय सुनो श्री राम।
पुष्पक विमान कुबेर का, है रखा रावण के धाम।
अयोध्या नगरी पहुँचाना बस एक दिवस का काम।
पुष्पक आया, मन को भाया, सब हर्षित होते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।72।।

विभीषण और सुग्रीव ने की श्री राम से एक निवेदन।
माताओं और भरत भाई के हमें कराओ दर्शन।
राज्याभिषेक के साक्षी बने, करते हैं यही निवेदन।
हुए राम प्रसन्न,पुलकित तन–मन, सब अयोध्या जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।73।।

राम–लखन व जनक सुता, चढे सब पुष्पक विमान।
सुग्रीव, विभीषण, सेनापति और चढे वीर हनुमान।
तेज गति से उड़ने लगा वह राजहंस के समान।
किया सागर पार, किष्किन्धा द्वार;कुछ पल रूकवाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।74।।

| जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम |

| जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम | जय श्री राम |

सीता के आग्रह पर रूमा व तारा रानी को बुलवाया।
आदर–सत्कार से दोनों को फिर अपने पास बिठाया।
सभी हुए प्रसन्न देख कर सुग्रीव का मन हर्षाया।
चला पुष्पक विमान, वायु के समान, गंगा तट आते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।75।।

चैत्र शुक्ला पंचमी को पहुँचे भारद्वाज मुनि के पास।
आशीर्वाद ऋषि का पाकर किया रात्रि वहीं पे निवास।
हनुमान को तुरन्त राम ने भेजा भाई भरत के पास।
सब हाल सुना और गले लगा, हर्षित हो जाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।76।।

अगले दिवस पुष्पक विमान फिर पहुँचा नन्दी ग्राम।
भाई भरत का आलिंगन कर, पुलकित हुए श्री राम।
गुरूजनों के चरणों में किया सीस झुका प्रणाम।
हुआ प्रेम मिलन, गीले थे नयन, सब जन हर्षाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।77।।

जटा कटा उबटन लगा, किया सब ने फिर स्नान।
सुन्दर वस्त्राभूषण युक्त हो, किया अयोध्या प्रस्थान।
हाथी, घोड़े और रथों का था लश्कर बड़ा महान्।
थे मार्ग सजे, बाजे–गाजे बजे, जय नाद गुंजाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।78।।

नदियों और सागर के जल से हुआ राम अभिषेक।
वेद पाठी ब्राह्मणों ने किया, तब मन्त्र पाठ विशेष।
ऋषि वशिष्ठ ने मुकुट पहना कर किया राज्याभिषेक।
हुआ ब्रह्म दान, मित्रों का मान, श्रीराम करवाते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।79।।

राम राज्य से बढ़ कर था नहीं कोई धरा पर राज।
पाप–ताप, सन्ताप नहीं था, नहीं वर्णहीन समाज।
अनाथ, विधवा, चोर–लुटेरों से था सारा रिक्त समाज।
अश्वमेध यज्ञ और विविध यज्ञ, श्री राम कराते हैं।।
मर्यादा पालक रामचन्द्र की गाथा हम गाते हैं।।80।।

## रामराज्य महिमा

सुनो रे भाई राम राज्य सुखदाई।।
पाप–ताप नहीं व्यापे जग में, धर्म ध्वजा लहराई।।

प्रजाजन सब धर्म पे चलते।
पाप कर्म वे कभी नहीं करते।
प्रेम भाव चारों वर्णों में, नहीं ऊंच–नीच अपनाई।।
सुनो रे भाई राम राज्य सुखदाई।।1।।

ठग – डाकु नहीं चोर – लुटेरे।
कर्म योग के सब थे चितेरे।
दीन–हीन नहीं कोई भिखारी, सब कर्मनिष्ठ कहलाई।।
सुनो रे भाई राम राज्य सुखदाई।।2।।

अनाथ नहीं कोई विधवा रोवे।
बाल मरण सन्ताप न होवे।
पूर्ण आयु भोग के ही सब परलोक गमन पर जाई।।
सुनो रे भाई राम राज्य सुखदाई।।3।।

* * *

वेद – शास्त्र सब पढते – पढाते।
सत्य – अहिंसा को अपनाते।
तप – त्याग करूणा की मुरत, ऋषि–मुनि कहलाई।।
सुनो रे भाई राम राज्य सुखदाई।।4।।

राम राज्य में सब थे योगी।
कामाचारी नहीं विषयाभोगी।
सदाचार और सद्व्यवहार सब नर–नारी अपनाई।।
सुनो रे भाई राम राज्य सुखदाई।।5।।

सन्ध्या हवन घर – घर में होते।
पावन गायत्री सब थे गाते।
ओम् नाम सब के हृदय में, राम की महिमा गाई।।
सुनो रे भाई राम राज्य सुखदाई।।6।।

(संगीतमय रामकथा समाप्त)

## ★ भजन ★

प्रभु जी कैसी दुनियां बनाई।
दुनियां बनाई, कैसी रचना रचाई।
सुन्दर कला दिखाई-दिखाई रे।।प्रभु जी . . .।।

नील गगन क्या सुन्दर क्यारी।
चान्द सितारों की फुलवारी।
सुरज में आग लगाई-लगाई रे।।प्रभु जी . . .।।

फूल-फूल में खुशबु न्यारी।
रंग-बिरंगी क्या केसर-क्यारी।
शोभा अजब बनाई-बनाई रे।।प्रभु जी . . .।।

हिमगिरी आकाश को चूमे।
काली घटायें उस पर झूंमे।
अमृत रस बरसाई-बरसाई रे।।प्रभु जी . . .।।

सोना - चान्दी, हीरे - मोती।
अन्न-धन सब यह धरती देती।
प्राण वायु सुखदाई-सुखदाई रे।।प्रभु जी . . .।।

महिमा तेरी कैसे गाएं।
ऐसा ज्ञान कहाँ से लाएं।
अद्भुत कला सवाई-सवाई रे।।प्रभु जी . . .।।

## ★ भजन ★

भजन करले तू ईश्वर का यह तेरे काम आयेगा।
जमाना तो है यह फर्जी किसी दिन छूट जायेगा।।

तू आया क्यों यहाँ जग में विचारा ही नहीं तूने।
चला–चल का यह मेला है रात को उजड़ जायेगा।।

यहाँ की कोई भी वस्तु ना तेरे साथ जायेगी।
तेरे सब पाप – पुण्यों का ही लेखा संग जायेगा।

यहाँ कोई नहीं तेरा और ना तू किसी का है।
यह रिस्ते–नाते है कच्चे, यह बन्धन टूट जायेगा।।

जवानी के सभी अरमां बुढापा तोड़ डालेगा।
अन्त में यह बदन तेरा चिता में रखा जायेगा।।

सम्भल जा अब भी मौका है, प्रभु को याद कर प्यारे।
ओम् का नाम तू जपले किनारा मिल ही जायेगा।।

## ★ भजन ★

मोरी बिनती सुनो भगवान्, आयो शरण तिहारी।
मोहे दो भक्ति का दान, आयो शरण तिहारी।।

दया का सागर नाम तिहारा।जन–जन ने है यही पुकारा।
तेरी महिमा बड़ी महान्, आयो शरण तिहारी।।

मैं अज्ञानी, निर्बल प्राणी। महिमा सन्त जनों ने जानी।
तेरे द्वार पड्यो कर ध्यान,आयो शरण तिहारी।।

राग–द्वेष का फिरूं सताया। मोह–माया ने मोहे भरमाया।
मेरा दूर करो अज्ञान, आयो शरण तिहारी।।

भजनामृत का पान करा दो।सन्तजनों का संग करा दो।
मिले वेदों का अब ज्ञान, आयो शरण तिहारी।।

ओम् नाम मेरे मन भाया। गायत्री में ध्यान लगाया।
मिले मुक्ति का वरदान, आयो शरण तिहारी।।
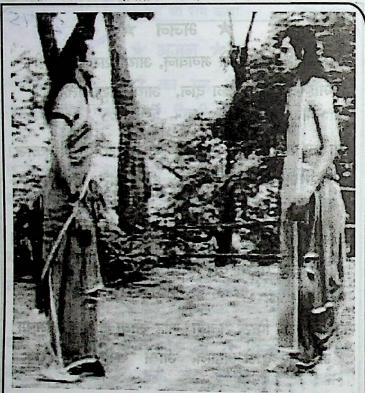

। जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम । जय श्री राम ।

## राम भरत मिलन

अगले दिवस पुष्पक विमान
फिर पहुंचा नन्दी ग्राम।
भाई भरत का आलिंगन
कर, पुलकित हुए श्री राम।
गुरूजनों के चरणों में
किया सीस झुका प्रणाम।

## श्रीराम दरबार

राम राज्य से बढ़ कर था नहीं कोई धरा पर राज।
पाप–ताप, सन्ताप नहीं था, नहीं वर्णहीन समाज।
अनाथ, विधवा, चोर–लुटेरों से था सारा रिक्त समाज।
अश्वमेध यज्ञ और विविध यज्ञ, श्री राम कराते हैं।।

★ ★ ★
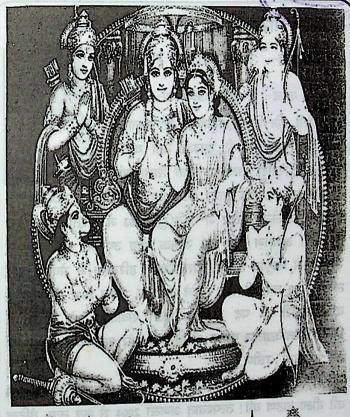
## संक्षिप्त परिचयः म. ओम् मुनि वानप्रस्थ (पूर्व नाम– ओम् प्रकाश त्यागी)

जन्म– 12 अप्रेल 1944, ग्रा–शेखपुरा, तह–हांसी, जि–हिसार(हरियाणा) में। माता व पिता का नाम–श्रीमती सुखमां देवी व श्री मोलु राम त्यागी शिक्षा–प्राथमिक शिक्षा गांव के विद्यालय में, हाई स्कूल की शिक्षा एस. डी. हाई स्कूल हांसी। दयानन्द कालेज, हिसार में पढते हुए 1963 में भारतीय थल सेना में भर्ती। लगभग आठ वर्ष सैनिक सेवा उपरान्त वर्ष 1971 में सैनिक से विमुक्त होकर, वित्त विभाग हरियाणा में सेवारत और लगभग 30 वर्ष की सेवा करने उपरान्त, अप्रेल 2002 में सहायक कोषाधिकारी के पद से सेवानिवृत। सेवाकाल के दौरान ही हिन्दी विश्वविद्यालय प्रयाग से विशारद और साहित्य रत्न (हिन्दी) की पराक्षायें उत्तीण की।

जुलाई 2004 में आत्म शुद्धि आश्रम, बहादुरगढ में वानप्रस्थ की दीक्षा ग्रहण की। तत्पश्चात् अगस्त 2004 से अब तक, वैदिक भक्ति साधन आश्रम में निवास कर, यज्ञ, स्वाध्याय व साधना के साथ–साथ संगीत एवं काव्य कला का अभ्यास व लेखन कार्य। प्रकाशित रचनाः– ओम् भजन सुधा व संगीतमय श्री रामकथा। लेख–सृष्टि संवत एवं मानव व वेद उत्पत्ति संवत, कल्याणी मधुर वाणी, ब्रह्मयज्ञ का वास्तविक स्वरूप व स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान गीत आदि। अप्रकाशित रचनाएं–वैदिक सन्ध्योपासना विधि, हमारे पर्व और हमारी मान्यताएं, लेख– सा मा शान्तिरधि, अग्नि देवाय नमः, जीयें तो कैसे जीयें जगत् में व कर्म प्रधान विश्व रचि राखा आदि।............................................................ □□

राम राज्य से बढ़ कर था नही कोई धरा पर राज।
पाप–ताप, सन्ताप नही था, नही वर्णहीन समाज।
अनाथ, विधवा, चोर–लुटेरों से था सारा रिक्त समाज।
अश्वमेध यज्ञ और विविध यज्ञ, श्री राम कराते हैं।।